आधारशिला
क्रियान्वयन संदर्शिका

कक्षा–3 (भाषा)

2020–2021

समग्र शिक्षा, उ.प्र.

संरक्षण	:	**श्रीमती रेणुका कुमार,** आई.ए.एस अपर मुख्य सचिव (बेसिक शिक्षा) उ.प्र. शासन, लखनऊ
निर्देशन		**श्री विजय किरन आनन्द,** आई.ए.एस महानिदेशक, स्कूल शिक्षा एवं राज्य परियोजना निदेशक, समग्र शिक्षा, उ.प्र.
संकल्पना एवं मार्गदर्शन	:	**श्री सत्येन्द्र कुमार,** आई.ए.एस. अपर राज्य परियोजना निदेशक, समग्र शिक्षा, उ.प्र. **श्री सर्वेन्द्र विक्रम सिंह** निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, लखनऊ
समन्वयन	:	**श्री आनन्द पाण्डेय,** वरिष्ठ विशेषज्ञ एवं प्रभारी, गुणवत्ता प्रकोष्ठ, समग्र शिक्षा **श्रीमती शिखा शुक्ला,** विशेषज्ञ, गुणवत्ता प्रकोष्ठ, समग्र शिक्षा **श्री पी. एम. अन्सारी,** राज्य सलाहकार, गुणवत्ता प्रकोष्ठ, समग्र शिक्षा
परामर्श	:	**श्री अजय कुमार सिंह,** राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र., लखनऊ **श्रीमती दीपा तिवारी,** राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र., लखनऊ
समीक्षा एवं संपादन	:	**श्री पी. एम. अन्सारी,** राज्य सलाहकार, गुणवत्ता प्रकोष्ठ, समग्र शिक्षा **श्री रमेश चंद्र,** लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, नई दिल्ली
लेखन मंडल	:	डॉ दिलीप कुमार तिवारी (सहायक अध्यापक, पूर्व माध्यमिक विद्यालय जुगराजपुर, कौशाम्बी, एवं SRG कौशाम्बी जनपद), कृष्ण मुरारी उपाध्याय (प्रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय पठा, महरौनी, ललितपुर) योगेन्द्र सिंह (प्रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय सलारपुर, रामनगर, जौनपुर एवं ARP जौनपुर), रागिनी गुप्ता (प्रधानाध्यापिका, अभिनव प्रा0वि0 ककोरगहना, जौनपुर), सुशील कुमार उपाध्याय (सहायक अध्यापक, पूर्व माध्यमिक विद्यालय चांदपुर, सिकरारा, जौनपुर एवं ARP जनपद जौनपुर) वन्दना गुप्ता (सहायक अध्यापिका, पूर्व माध्यमिक विद्यालय मल्हौर, चिनहट, लखनऊ) श्रीप्रकाश सिंह (प्रधानाध्यापक, आदर्श प्राथमिक विद्यालय, मड़ियाहूँ प्रथम, रामनगर, जौनपुर एवं ARP जौनपुर) जय शेखर (सहायक अध्यापक, प्राथमिक विद्यालय धुसाह 1, बलरामपुर), जय प्रकाश सिंह (सहायक अध्यापक, पू.मा.वि खरगापुर, डीघ, भदोही) गजेन्द्र कुमार (सहायक अध्यापक, पूर्व माध्यमिक विद्यालय पूरेशम्भू, औराई, भदोही एवं ARP), सुप्रिया घोष (लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, नई दिल्ली) सहदेव पंवार (लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, नई दिल्ली) विशाल कश्यप (लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, उत्तर प्रदेश)
ले–आउट एवं ग्राफिक्स डिज़ाइन	:	स्टेला डिज़ाइन एण्ड प्रिंट, न्यू दिल्ली

आभार: इस पुस्तक के निर्माण में कई स्रोतों से सामग्रियों का उपयोग किया गया है, इसके लिए हम सभी के आभारी हैं।

योगी आदित्यनाथ

मुख्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा 'मिशन प्रेरणा' के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु 'आधारशिला क्रियान्वयन संदर्शिका' का प्रकाशन किया जा रहा है।

प्राथमिक शिक्षा बच्चों को आदर्श संस्कार प्रदान करते हुए उन्हें सभी प्रकार से योग्य व सक्षम बनाने का प्रथम सोपान है। बच्चे अपने सपनों को साकार कर सकें, इसके लिए आवश्यक है कि उनमें सृजनात्मकता, वैज्ञानिक चिंतन, जीवन मूल्य के तत्व तथा स्वयं को व्यक्त करने की क्षमता विकसित की जाए। इस कार्य में प्राथमिक शिक्षा की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

शिक्षा को रुचिकर, आनन्दमय, जीवन्त और अपेक्षित ज्ञान व कौशलों से परिपूर्ण बनाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। इस कार्य में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका है। 'मिशन प्रेरणा' के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु 'आधारशिला क्रियान्वयन संदर्शिका' का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है। मुझे अवगत कराया गया है कि संदर्शिका में समय–सारिणी, प्रेरणा सूची, प्रेरणा लक्ष्य, लर्निंग आउटकम का विभाजन, भाषा एवं गणित की संकल्पना, समझ, पहचान तथा आकलन, कक्षा प्रबन्धन गतिविधियों आदि का समावेश किया गया है। मुझे आशा है कि यह संदर्शिका सभी शिक्षकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

'आधारशिला क्रियान्वयन संदर्शिका' के उद्देश्यपरक प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(योगी आदित्यनाथ)

दूरभाष : 0522-2236181/2239296 फैक्स - 0522-2239234 ईमेल - cmup@nic.in

डॉ सतीश चन्द्र द्विवेदी

राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
बेसिक शिक्षा, उ०प्र० सरकार

संदेश

"निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम–2009" के अन्तर्गत 6 से 14 वयवर्ग के सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक शिक्षा उपलब्ध कराना उत्तर प्रदेश शासन की संवैधानिक प्रतिबद्धता है। इसी पृष्ठभूमि में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की संकल्पना को मूर्त रूप प्रदान करने के लिये **"मिशन प्रेरणा"** लागू किया गया है।

नई शिक्षा नीति 2020 में फाउण्डेशनल लिटरेसी एण्ड न्यूमरेसी पर विशेष ध्यान केन्द्रित किये जाने के दृष्टिगत कक्षा 1–5 के बच्चों में गणित एवं भाषा में अधिगम स्तर की सम्प्राप्ति हेतु कार्ययोजना बनाते हुए **'मिशन प्रेरणा'** के लक्ष्य निर्धारित किये गये हैं। उक्त लक्ष्यों को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षकों के उपयोगार्थ तीन हस्तपुस्तिकायें –**'आधारशिला', 'शिक्षण संग्रह'** एवं **'ध्यानाकर्षण'** विकसित की गयी हैं। इन हस्तपुस्तिकाओं में पाठ्य पुस्तकों में निर्धारित पाठ्यक्रम को पढ़ाने का तरीका और कक्षा–कक्ष वातावरण को विस्तार से स्पष्ट किया गया है।

प्रारम्भिक स्तर पर कक्षा 1 व 2 में भाषा व गणित विषयों को रोचक तरीकों व गतिविधियों से शिक्षण कराने तथा इन विषयों पर बच्चों की समझ का विकास कर मजबूत आधारशिला रखे जाने के उद्देश्य से **"आधारशिला क्रियान्वयन संदर्शिका"** विकसित की गयी है। संदर्शिका में वर्णित रूचिपूर्ण एवं आकर्षक सामग्री व तकनीक बच्चों को सीखने के लिये उपयोगी सिद्ध होगी, जिससे वे मुख्यधारा में सम्मिलित होकर मासिक पाठ्यक्रम एवं उपलब्धि संकेतकों के अनुसार ज्ञानार्जन कर सकेंगे। इससे कक्षा के वातावरण को अधिगमपूर्ण एवं आनन्ददायक बनाने तथा शिक्षकों की क्षमता संवर्द्धन में बल मिलेगा। इसी आशा एवं विश्वास के साथ सभी शिक्षकों/शिक्षिकाओं के प्रति अपनी शुभकामनायें देता हूँ।

डॉ0. सतीश चन्द्र द्विवेदी
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

रेणुका कुमार
आई०ए०एस०,
अपर मुख्य सचिव,
राजस्व एवं बेसिक शिक्षा विभाग,
उ०प्र० शासन

संदेश

प्राचीन काल से शिक्षा भविष्य के समाज की धरोहर के रूप में जानी जाती है। भविष्य के समाज के विकास को ध्यान में रखकर वर्तमान में शिक्षा पर निवेश किया जाता है। शिक्षक समाज में परिवर्तन के सच्चे संवाहक तथा बच्चों की अमूर्त आकांक्षाओं को मूर्त रूप दे सकते हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की संकल्पना को मूर्त रूप देने हेतु **'मिशन प्रेरणा'** लागू किया गया है। विद्यालयों में अवस्थापनाओं के सुदृढ़ीकरण हेतु 'ऑपरेशन कायाकल्प' संचालित किया जा रहा है, जिसके माध्यम से मूलभूत सुविधाओं का संतृप्तीकरण किया जा रहा है। शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने हेतु फाउण्डेशनल लर्निंग पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया जा रहा है। प्रेरणा लक्ष्यों की प्राप्ति के उद्देश्य से शिक्षकों की क्षमता संवर्द्धन हेतु तीन मॉडयूल्स (''आधारशिला'', ''शिक्षण संग्रह'' एवं ''ध्यानाकर्षण'') विकसित किये गये हैं जिन्हें प्रत्येक शिक्षक को उपलब्ध कराया जा रहा है।

उक्त श्रृंखला में नव विकसित **''आधारशिला कियान्वयन संदर्शिका''** के द्वारा **''मिशन प्रेरणा''** के अन्तर्गत सभी बच्चों को सीखने के लिए रूचिपूर्ण एवं आकर्षक सामग्री व प्रभावकारी तकनीक सभी शिक्षकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी और वे कक्षा के वातावरण को अधिगमपूर्ण एवं आनन्ददायक बनाने में सफल होंगे। इसी आशा एवं विश्वास के साथ सभी शिक्षकों/शिक्षिकाओं के प्रति अपनी शुभकामनाएं देती हूँ।

(रेणुका कुमार)
अपर मुख्य सचिव

विषय सूची

पाठ	विषय	पृष्ठ
1	प्रेरणा सूची – हिंदी (कक्षा 3)	1
2	'मिशन प्रेरणा' का संक्षिप्त परिचय एवं आधारशिला क्रियान्वयन संदर्शिका का उपयोग	2
	भाग–1 : सैद्धांतिक समझ	
3	प्रवाहपूर्ण पठन और पढ़कर समझना	6
	भाग–2 : कक्षा–3 में भाषा शिक्षण के अकादमिक सत्र की रूपरेखा, कार्य योजना एवं गतिविधियाँ	
4	अकादमिक सत्र 2020–21 में कक्षा–3 में भाषा शिक्षण पर कार्य	16
5	सप्ताहवार वार्षिक शिक्षण योजना	18
6	सहायक शिक्षण सामग्री एवं प्रेरणा सूची की दक्षताएँ	21
7	प्रथम कालांश (सहायक सामग्री) पर कार्य करने की रणनीति	22
8	प्रथम कालांश में सहायक सामग्री पर कार्यः सप्ताह 1–10	23
9	कलरव–3 एवं प्रेरणा सूची की दक्षताएँ	40
10	प्रथम कालांश में सहायक सामग्री पर कार्यः सप्ताह 11–16	41
11	द्वितीय कालांश (कलरव–3) पर कार्य करने की रणनीति	42
12	आकलन एवं पुनरावृत्ति	50
13	भाषा शिक्षण से संबंधित कुछ प्रमुख बातें	52

विषय सूची

पाठ	विषय	पृष्ठ
भाग 3 : कक्षा–3 के शिक्षण कार्य से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण पहलू		
14	कक्षा प्रबंधन	54
15	कक्षा में प्रिंट रिच (प्रिंट समृद्ध) वातावरण	57

1. प्रेरणा सूची – हिंदी (कक्षा 3)

विषय	LO Code	दक्षताएँ
सुनकर समझना और प्रतिक्रिया देना	H301	समझ लेता/लेती है कि आदर्श वाचन किये जा रहे पाठ में सन्दर्भ के अनुरूप अर्थ किस तरह परिवर्तित होता है।
	H302	आदर्श वाचन किये गए पाठ में से मुख्य विचारों, पात्रों व घटनाओं को विस्तार से बता सकता/सकती है व आदर्श वाचन किये गए पाठ से निष्कर्ष निकाल सकता है (ग्रेड 3 के स्तर का पाठ)।
मौखिक शब्दावली	H303	टायर/स्तर–2 के शब्दों से संबंधित वृहद शब्दावली को समझ लेता/लेती है व अमूर्त शब्दों को भी उपयुक्त तरीके से इस्तेमाल कर सकता/सकती है।
मौखिक अभिव्यक्ति व वर्णन	H304	हिन्दी में अपनी सोच, विचारों व राय को मौखिक रूप से बता सकता/सकती है तथा पात्रों और कथानक के बारे में प्रश्न पूछ सकता/सकती है।
	H305	अधिक परिष्कृत व जटिल शब्दावली और वाक्य संरचना का इस्तेमाल करते हुए चित्रों पर आधारित किसी कहानी को सुना सकता/सकती है।
शब्द पहचान/पढ़ना	H306	अपरिचित शब्दों जिनमें संयुक्ताक्षरों से बने व बहु–अक्षरीय शब्द भी शामिल हैं, को शुद्धता के साथ पढ़ सकता/सकती है।
मौखिक पठन प्रवाह	H307	अपने ग्रेड के स्तर के 10–12 वाक्यों (70–100 शब्द) से बने पाठ्यांश को बेहतर प्रवाह व शुद्धता के साथ पढ़ सकता/सकती है।
पढ़कर समझना	H308	ग्रेड 3 के स्तर के पाठ (अलग–अलग शैली के) को समझते हुए पढ़ सकता/सकती है व साथ में शब्दों के अर्थ भी जानता है।
	H309	पूरे पाठ की एक पूर्ण समझ बनाते हुए तार्किक कौशलों का इस्तेमाल कर सकता/सकती है और पाठ के बारे में अपनी राय निर्मित कर सकता/सकती है।
	H310	पाठ में मुख्य जानकारी निकाल सकता/सकती है, 2 या अधिक वाक्यों के आधार पर निष्कर्ष निकाल सकता/सकती है।
	H311	सामान्य मुहावरों व विभिन्न प्रकार की वाक्य संरचनाओं से अर्थ निर्माण कर सकता/सकती है।
	H312	कहानी को परिस्थिति, पात्रों, घटनाओं के सही क्रम व सही अंत के साथ पुनः सुना सकता/सकती है।
लेखन	H313	पाठ से प्रत्यक्ष तौर पर जुड़े हुए प्रश्नों के उत्तर में 2–3 वाक्यों में संरचनाबद्ध जवाब लिख सकता/सकती है।
	H314	उपयुक्त संज्ञा शब्दों, सर्वनाम, विशेषण, पूर्वसर्ग और वाक्य संरचनों का इस्तेमाल करते हुए 5–6 वाक्यों के एक सार्थक पाठ की रचना करना और लिखना।

2. 'मिशन प्रेरणा' का संक्षिप्त परिचय एवं आधारशिला क्रियान्वयन संदर्शिका का उपयोग

'मिशन प्रेरणा' के तहत प्राथमिक कक्षाओं में सुनियोजित तरीके से कार्य करने की आवश्यकता एवं स्कूल की भूमिका

हम सभी जानते हैं कि राज्य भर में बेसिक शिक्षा विभाग के तहत 1.6 लाख स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए 'मिशन प्रेरणा' उत्तर प्रदेश सरकार का एक प्रमुख कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्राथमिक कक्षाओं में भाषा एवं गणित के बुनियादी अधिगम कौशलों पर विशेष एवं व्यवस्थित रूप से कार्य करना है। भाषा के परिपेक्ष्य में शैक्षिक वर्ष 2020–2021 में, कक्षा–3 में बच्चों की मौखिक भाषा के विकास एवं उससे संबंधित लेखन कार्य और समझ के साथ पढ़ने पर एक व्यवस्थित रणनीति के तहत कार्य किया जाना है। ऐसा इसलिए क्योंकि प्रारंभिक स्तर पर इन दोनों कौशलों पर कार्य करना अत्यंत ज़रूरी होता है और अगर इन पर सुनियोजित तरीके से कार्य न किया जाए तो आगे चलकर बच्चों की 'सीखने की प्रक्रिया' बाधित होती है और बच्चे आगामी कक्षाओं में निर्धारित किए गए अधिगम लक्ष्य को हासिल करने में पीछे छूट जाते हैं।

ऊपर उल्लिखित उद्देश्य को हासिल करने के लिए इस कार्यक्रम में दक्षताओं की एक सूची–'प्रेरणा सूची' तैयार की गई है। इस सूची में भाषा से संबंधित 7 कौशलों की पहचान की गई है एवं इनसे जुड़ी हुई 14 दक्षताओं को आधार बनाकर शिक्षण कार्य की योजना बनाई गई है। इन निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए राज्य के प्रत्येक स्कूल एवं प्राथमिक कक्षाओं के स्कूल शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

आधारशिला क्रियान्वयन संदर्शिका के विभिन्न पहलुओं पर बातचीत एवं इसकी उपयोगिता

इस संदर्शिका के माध्यम से हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि भाषा शिक्षण में शामिल विभिन्न गतिविधियों को क्यों व कैसे करवाया जाना ज़रूरी है। इस संदर्शिका को बनाने का एवं शिक्षकों के साथ साझा करने का मुख्य उद्देश्य सभी शिक्षकों को पूरे अकादमिक सत्र की परिकल्पना करने में मदद करना एवं प्रेरणा सूची में निर्धारित दक्षताओं को प्रत्येक बच्चे द्वारा हासिल करने में सहयोग करना है।

लेकिन, इन पर बात करने से पहले, इस संदर्शिका में हम कक्षा–3 में भाषा शिक्षण के महत्वपूर्ण पहलुओं (सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक) पर विस्तृत चर्चा करेंगे और फिर एक सुनियोजित कार्य योजना को अपनाते हुए 'मौखिक भाषा विकास' और 'समझ के साथ पढ़ने' की अलग–अलग गतिविधियों पर व्यवस्थित तरीके से कैसे कार्य किया जाना है, इस पर अपनी समझ बनाएँगे।

नोट : इस संदर्शिका में 'शिक्षक' शब्द का प्रयोग शिक्षक एवं शिक्षिका दोनों के लिए किया गया है।

इस संदर्शिका के 3 भाग हैं :

भाग 1 : सैद्धांतिक समझ

भाग 2 : कक्षा–3 में भाषा शिक्षण के अकादमिक सत्र की रूपरेखा, कार्ययोजना और गतिविधियाँ

भाग 3 : कक्षा–3 के शिक्षण कार्य से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण पहलू

आइए, इन सभी भागों पर चर्चा करते हैं।

भाग 1 : भाग–1 में पढ़ने के कौशल से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डालेंगे। बच्चे कक्षा–1 से 3 तक आते–आते सभी वर्णों–मात्राओं से बने शब्दों को पढ़ना सीख जाते हैं। आगे जाकर बच्चों को शब्दों को कुशलता के साथ पहचानने और पाठ को प्रवाह के साथ पढ़ने की ज़रूरत पड़ती है। यह कौशल पाठ को समझने के लिए आवश्यक है। इस पर बात की गई है।

साथ ही, इस भाग में बच्चों में पढ़कर समझने के कौशल विकसित करने के लिए किस तरह का शिक्षण कार्य हो – इस पर भी चर्चा की गई है। कक्षा में इसके लिए अलग–अलग तरह की कई रणनीतियों को विस्तार से बताया गया है।

भाग 2 : इस संदर्शिका के भाग–2 में, इस वर्ष भाषा शिक्षण में कैसे कार्य किया जाना प्रस्तावित है, इस पर विस्तार से बात करेंगे। पाठ्यपुस्तक के पाठों एवं सहायक सामग्रियों से संबंधित गतिविधियों को प्रेरणा सूची की दक्षताओं के साथ इस संदर्शिका में दिया गया है। इससे शिक्षकों को यह निरंतर रूप से पता चलता रहेगा कि भाषा कालांशों की प्रत्येक गतिविधि में प्रेरणा सूची की किन–किन दक्षताओं पर कार्य किया जा रहा है। इसके साथ–ही, इन कालांशों में विभिन्न गतिविधियों पर कैसे कार्य करना है और इन पर कार्य करने के दौरान किन बातों का ध्यान रखा जाना आवश्यक है, इन पहलुओं पर बातचीत की गई है।

इसके अलावा संदर्शिका में भाषा कालांश के लिए साप्ताहिक योजना एवं दैनिक कार्य योजना के नमूने दिए गए हैं। इस भाग में प्रेरणा सूची की दक्षताओं एवं विभिन्न गतिविधियों का आकलन एवं पुनरावृत्ति की योजना स्कूल/कक्षा के स्तर पर कैसे की जानी चाहिए, इस विषय को विस्तार से रखा गया है। इस भाग में दिए गए सभी पहलुओं के माध्यम से शिक्षकों को कक्षा–3 में भाषा पर कार्य करने का ख़ाका (ब्लू प्रिंट) मिल जाएगा जो उन्हें कक्षा में सहजता से कार्य करने में मदद करेगा।

भाग 3 : शिक्षण प्रक्रिया में कक्षा प्रबंधन और प्रिंट रिच वातावरण पर विस्तृत बातचीत की गई है। इससे शिक्षकों को भाग 3 में दिए गए दिशानिर्देशों को ध्यान में रखकर, कक्षा को प्रभावी ढंग से व्यवस्थित करने में मदद मिलेगी।

इस शिक्षक संदर्शिका में कुछ बातें आपकी नज़रों के सामने से बार–बार गुज़रेंगी जैसे, बच्चों के घर की भाषा को कक्षा में स्थान देना, प्रत्येक बच्चे को कक्षा में हो रही शिक्षण प्रक्रिया में जुड़ने का अवसर मिलना, बच्चों को बातचीत एवं चर्चा में हिस्सा लेने के ज़्यादा से ज़्यादा मौके, भयरहित वातावरण, बच्चों द्वारा जोड़ों एवं समूह में कार्य, नियमित एवं पर्याप्त पठन–अभ्यास के मौके, अभिव्यक्ति से जुड़े अर्थपूर्ण लेखन कार्य, शिक्षकों द्वारा व्यवस्थित तरीके से गतिविधियों पर कार्य करना, आदि। हम सभी शिक्षकों को इन बातों का ख़्याल हमेशा रखना चाहिए एवं एक 'चिंतनशील शिक्षक' (reflective teacher practitioner) की भूमिका को अपनाते हुए कक्षा में उत्साहवर्धक वातावरण बनाना चाहिए तथा बच्चों को सीखने के सक्रिय एवं सार्थक मौके मिलें। साथ ही, संवेदनशीलता के साथ बच्चों को अपने तत्कालीन अधिगम स्तर से अगले स्तर पर जाने के लिए प्रोत्साहित करना, उचित मार्गदर्शन और ज़रूरी अवसर देना भी हम शिक्षकों की अहम् जिम्मेदारी है।

हम आशा करते हैं कि अकादमिक सत्र 2020–2021 सभी शिक्षकों एवं बच्चों के लिए एक अनोखा अनुभव लेकर आएगा और हम सब मिलकर 'मिशन प्रेरणा' के उद्देश्य एवं लक्ष्य को हासिल करेंगे।

भाग 1

सैद्धांतिक समझ

3. प्रवाहपूर्ण पठन और पढ़कर समझना

मिशन प्रेरणा के अंतर्गत कक्षा–3 में यह अपेक्षित है कि बच्चा अपनी कक्षा के स्तर के पाठ (अलग–अलग शैली के) को बेहतर प्रवाह व शुद्धता के साथ पढ़ते हुए उस पर अपनी समझ बना सके। मिशन प्रेरणा के अंतर्गत कक्षा–3 के लिए तैयार की गयी प्रेरणा सूची में कई आवश्यक दक्षताओं की बात की गयी है। पठन से जुड़ी दक्षताओं में विशेष रूप से बच्चों में प्रवाहपूर्ण पठन एवं समझते हुए पढ़ने का कौशल महत्वपूर्ण हैं। हम आगे इन्हीं दो बिंदुओं पर सैद्धांतिक समझ बनाने के लिए विस्तार से बात करेंगे–

1. प्रवाहपूर्ण पठन क्या है और यह पढ़कर समझने के लिए क्यों आवश्यक है?
2. कक्षा में बच्चों के पढ़कर समझने के कौशल विकसित करने के लिए किस तरह की रणनीतियाँ अपनाई जाए?

प्रवाहपूर्ण पठन क्या है और यह पढ़कर समझने के लिए क्यों आवश्यक है?

प्रवाहपूर्ण पठन क्या है?

यदि कोई पाठक पाठ को सटीक ढंग से (बिना गलतियों के), उपयुक्त गति से और आवश्यक भाव के साथ पढ़ सकता है तो इसे प्रवाहपूर्ण पठन कहते हैं। प्रवाहपूर्ण पठन के लिए ज़रूरी है कि पाठक को शब्द पहचानने के लिए सचेत रूप से बहुत चेष्टा न करनी पड़े। पढ़ने में प्रवाह ही असल में संकेत देता है कि पाठक पढ़ी जा रही सामग्री कितनी अच्छी तरह समझ पाने की क्षमता रखता है। जैसा कि हमने ऊपर देखा, बच्चों की पठन क्षमता में बहुत भिन्नता होती है। पाठ पढ़ने के बार–बार अभ्यास से पढ़ने की गति बढ़ती जाती है, समय कम होता है, भावपूर्ण पठन में भी सुधार होता चला जाता है और बच्चों में पठन के दौरान होने वाली हिचक घटती जाती है। शुरुआती चरणों में बच्चा लिपि या कोड बेधने की कोशिश करता है। इसलिए, उसका मौखिक पठन धीमा और श्रमसाध्य होता है। यानी, अक्षरों के साथ ध्वनियाँ जोड़ने का, और ध्वनियाँ मिलाकर परिचित शब्द बनाने का अभ्यास करता है। यदि बच्चे कई शब्दों को तुरंत पहचान भी लेते हों तो भी उनका मौखिक पठन बिना भावों के हो सकता है, जिसमें अभी प्रवाह नहीं बना है। प्रवाहपूर्ण पठन में तीन मुख्य तत्व शामिल होते हैं–

प्रवाहपूर्ण पठन के तत्व		
शब्द पहचान में सटीकता पाठ के शब्द सटीक ढंग से पहचानने की क्षमता	**शब्द पहचान में स्वतः स्फूर्तता** पाठ के शब्दों को बहुत कम ध्यान देते हुए और बिना प्रयास किए, तेजी से डिकोड करने या पहचानने की क्षमता	**भाव के साथ पढ़ना** भावों का उचित ढंग से प्रयोग करने की क्षमता

पढ़कर समझने में प्रवाहपूर्ण पठन की भूमिका

हम जानते हैं कि पढ़कर समझने में दो मुख्य कौशलों का योगदान है –

- **शब्द पहचान के कौशल**
- **भाषाई कौशल**

शब्द पहचान (आगे हम इसे डिकोडिंग कहेंगे), वर्ण– ध्वनि के संबंध को समझते हुए शब्द को पढ़ पाने की क्षमता है। जबकि 'भाषायी कौशल' से आशय एक भाषाई क्षमता से है जिसके तहत संवाद और अभिव्यक्ति के कौशल से जुड़े समृद्ध शब्द–भंडार, सांसारिक समझ, वाक्य–विन्यास की समझ और अर्थ निर्माण के कौशल इत्यादि आते हैं।

डिकोडिंग कौशल मज़बूत होने से एक बच्चे की कार्य–उर्जा का पूरा फ़ोकस अर्थ–निर्माण पर हो जाता है जिससे वह समझते हुए प्रवाहपूर्ण पठन में सक्षम हो पाता है। अक्सर मान लिया जाता है कि प्रवाह और समझ में एकतरफा संबंध है यानी बच्चा प्रवाह से पढ़ने लगे तो वह अपने आप समझने लगेगा। इसके पीछे धारणा है कि सटीक और तीव्र डिकोडिंग व शब्द–पहचान ही समझ बनाती है। लेकिन प्रवाह और समझ का संबंध एकतरफा नहीं है। कुछ हद तक समझे बिना, केवल मशीनी तौर पर किसी पाठ को प्रवाहपूर्वक पढ़ना संभव नहीं है। प्रवाहपूर्ण पठन और समझ साथ–साथ चलते हैं।

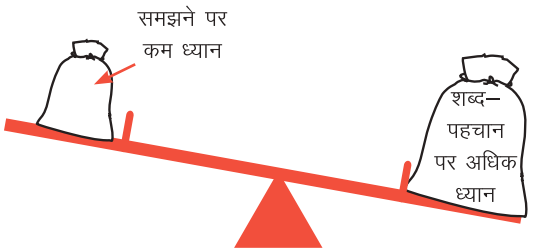

पहला बच्चा: जब बच्चा शब्द पहचानने पर ज्यादा सचेत रूप से ध्यान देता है तो समझने पर उतना ध्यान नहीं दे पायेगा

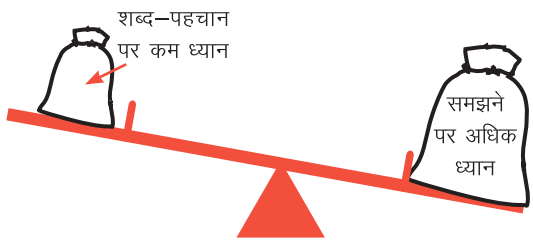

दूसरा बच्चा: जब शब्द पहचान पर सचेत रूप से ध्यान देने की आवश्यकता कम होती है क्योंकि पाठक ज्यादातर शब्दों को स्वतः स्फूर्त ढंग से पहचान सकता है, तो वह समझने पर ज्यादा ध्यान दे सकता है

जब पाठक तेज़ी से और आराम से किसी सूत्रबद्ध पाठ को पढ़ता जाए, बजाय शब्द–पहचान पर ध्यान देने के, वह अपना ध्यान पाठ का अर्थ पकड़ने में केंद्रित कर सकता है। इसके विपरीत, जो बच्चा शब्दों को डिकोड करने से जूझ रहा है, वह साथ–ही–साथ समझने पर ध्यान नहीं दे पाता है। परिणामस्वरूप, ऐसे बच्चे को बार–बार अपना ध्यान कभी शब्द पहचानने पर, और कभी अर्थ–निर्माण के बीच अदलते–बदलते रहना पड़ता है। इसकी वजह से दोनों में से कोई भी प्रक्रिया अच्छी तरह पूरी नहीं हो पाती। इससे ऐसी स्थिति बनती है, जिसमें पाठक पढ़े हुए को समझते नहीं हैं। इस तरह, स्कूल के शुरुआती 2 सालों में समझते हुए पढ़ने की क्षमता बनाने के लिए तीव्र और सटीक शब्द–पहचान एक अति महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

प्रवाहपूर्ण पठन में उपयुक्त कौशल विकसित करने के आवश्यक कारक

बच्चों में प्रवाहपूर्ण पठन के कौशल विकसित करने के कुछ आवश्यक कारक हैं, जिन पर कक्षा में कार्य किया जाना चाहिएः

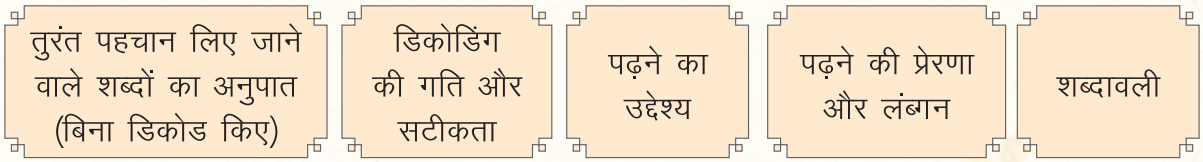

इन पर हम नीचे विस्तार से बात कर रहे हैंः

- **तुरंत पहचान लिए जाने वाले शब्दों का अनुपात (बिना डिकोड किए)**ः अगर पाठ में ज़्यादातर दृश्य शब्द (जिन्हें बच्चे बार–बार पढ़ने के अभ्यास के कारण देखते ही आकृति की तरह पहचान लेते हैं स) हैं जिन्हें पाठक देखते ही पहचान लेता है तो पढ़ने की गति बढ़ जाती है। दृश्य शब्दों की पहचान उन शब्दों से बार–बार परिचय के साथ ही पैदा होती है।
- **डिकोडिंग की गति और सटीकता**ः कम से कम प्रयास के सहारे कुशलतापूर्वक शब्दों को डिकोड करने की क्षमता से प्रवाह पर बड़ा असर पड़ता है। इसमें सुदृढ़ ध्वनि–चिह्न सह–संबंध, सम्मिश्रण और शब्दों को पढ़ने का भरपूर अभ्यास शामिल है।
- **पढ़ने का उद्देश्य**ः पाठक के लिए पढ़ने का उद्देश्य क्या है, यह गति को काफ़ी प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए, अगर परीक्षा की तैयारी के लिए पढ़ा जा रहा है तो पाठक जानबूझ कर धीरे–धीरे पढ़ेगा। जबकि यदि कहानी को केवल मज़े के लिए पढ़ा जा रहा है तो पाठक शायद उसे तेज़ी से पढ़ता जाएगा।
- **पढ़ने की प्रेरणा और लगन**ः यदि पाठ बच्चे के लिए रोचक नहीं है और उसके पास पढ़ने के लिए कोई ख़ास प्रेरणा या उद्देश्य नहीं है, तो आमतौर पर पाठ ज़बरदस्ती और धीरे–धीरे पढ़ा जाता है।
- **शब्दावली**ः पाठ में प्रयोग किए गए शब्दों और पाठक के शब्दावली भंडार के बीच सामंजस्य ज़रूरी है। इसके साथ शब्द के साथ अच्छा परिचय होना और शब्द के अर्थ को तुरंत कार्यस्मृति में ला पाने की क्षमता होनी चाहिए। जितनी आसानी से पाठक पाठ में प्रयुक्त शब्द समझेगा, उतनी ही अच्छी वह पढ़ने की गति हासिल कर पाएगा। भिन्न भाषायी पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चों के पास अक्सर औपचारिक भाषा की सीमित शब्दावली होती है। जब तक ये बच्चे बेहतर शब्दावली अर्जित नहीं कर लेते, वे प्रवाहपूर्ण पाठक नहीं बन सकते।

बच्चों में प्रवाहपूर्ण पठन के कौशल समय पर विकसित हो, इसके लिए यह तय करना आवश्यक है कि बच्चे शब्दों को पढ़ने के आधारभूत कौशल अच्छी तरह विकसित कर चुके हों स जो बच्चे कक्षा–1 और 2 में अच्छी तरह डिकोडिंग के कौशल प्राप्त कर लेते हैं और छोटे–छोटे पाठों को पढ़ने का नियमित अभ्यास करते हैं, वे प्रवाह के साथ पढ़ने और समझने के कार्य में अपनी दक्षता को बेहतर बनाते जाते हैं।

कक्षा में बच्चों के पढ़कर समझने के कौशल विकसित करने के लिए किस तरह की रणनीतियाँ अपनाई जाए?

क्या समझ के बिना मौखिक या लिखित भाषा का कोई औचित्य है? ज़ाहिर है कि अर्थ के बिना भाषा केवल ध्वनियों का घालमेल बनकर रह जाएगी। जितनी यह बात, बातचीत के लिए ज़रूरी है, उतनी ही पढ़ने के लिए भी। प्रवाहपूर्ण पठन के साथ ही समझते हुए पढ़ने के लिए आवश्यक है कि शिक्षक प्रत्यक्ष रूप से पढ़कर समझने से जुड़ी रणनीतियों पर कार्य करें।

समझते हुए पढ़ना क्या है?

अब तक हम यह जान चुके हैं कि पढ़ने का बुनियादी उद्देश्य ही है समझना और इसमें कई प्रक्रियाएँ शामिल हैं, तो चलिए अब ये जानने का प्रयास करते हैं कि समझते हुए पढ़ने में कौन–सी प्रक्रियाएँ शामिल हैं?

समझते हुए पढ़ने में शामिल प्रक्रियाएँ		
ध्वनि जागरूकता	पाठ को पढ़कर अपने अनुभवों के साथ जोड़ना	अर्थ बनाना
अनुमान लगाना	अपने पूर्व ज्ञान का इस्तेमाल करना	शब्दावली का प्रयोग करना
डिकोडिंग करना	तर्क–वितर्क / विश्लेषण करना	निष्कर्ष निकलना

वास्तव में समझते हुए पढ़ना एक गहन और सक्रिय प्रक्रिया है, जिसमें ऊपर दी गयी सभी क्षमताएँ शामिल हैं। समझ के बिना पढ़ना, पढ़ना नहीं केवल शब्द उच्चारित करना है।

यदि हम वास्तव में चाहते हैं कि सभी बच्चे समझते हुए पढ़ना सीखें तो प्रारंभिक कक्षाओं से ही पाठ को पढ़ाते समय उस पर ढेर सारी चर्चा की जानी चाहिए और समझते हुए पढ़ने से संबंधित उचित रणनीतियाँ सिखाई जानी चाहिए।

आइए, इस भाग में हम विस्तार से समझें कि समझते हुए पढ़ने की रणनीतियाँ क्या हैं–

समझते हुए पढ़ने की रणनीतियाँ

प्रेरणा मिशन के अंतर्गत कक्षा – 3 के लिए तैयार की गयी प्रेरणा सूची में समझते हुए पढ़ने को विशेष स्थान दिया गया है। इस में यह अपेक्षा की गयी है कि कक्षा 3 के अंत तक बच्चा कक्षा 3 के स्तर के पाठ को समझते हुए पढ़कर अर्थ समझ सके, तार्किक कौशलों का उपयोग कर सके, पाठ के बारे में अपनी राय निर्मित कर, 2 या अधिक वाक्यों के आधार पर निष्कर्ष निकालने के साथ सामान्य मुहावरों व विभिन्न प्रकार की वाक्य संरचनाओं से अर्थ निर्माण कर सके, कहानी को परिस्थिति, पात्रों, घटनाओं के सही क्रम

व सही अंत के साथ पुनः सुनाने में सक्षम हो सके। इन सभी प्रकार के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए पूरे वर्ष शिक्षकों को अपनी कक्षा में समझते हुए पढ़ने की विभिन्न रणनीतियों को स्थान देने की आवश्यकता है।

समझते हुए पढ़ने की विभिन्न रणनीतियों के माध्यम से सिखाने का मुख्य उद्देश्य यह है कि बच्चे इन्हें अपना कर समझ बढ़ाने के तरीके प्रयोग कर सकें। ये रणनीतियाँ बच्चों को स्पष्ट रूप से सिखाई जानी चाहिए, जैसे–

1. अनुमान लगाना, कहानी पढ़ने से पहले और पढ़ने के दौरान
2. अलग–अलग प्रकार के प्रश्न पूछ कर बच्चों को सोचने और अर्थ निर्माण करने के लिए प्रेरित करना
3. चित्र संयोजक का उपयोग करते हुए पाठ को बेहतर समझाना, पाठ पढ़ने के बाद या चर्चाओं के दौरान चित्र संयोजक बनाने के लिए प्रेरित करना
4. बच्चों के अनुभव और पूर्वज्ञान को सक्रिय करने के लिए कहना
5. सार–संकलन/पुनः सुनाना
6. बच्चों को प्रश्न बनाने के लिए प्रेरित करना

ये सभी रणनीतियाँ कक्षा 3 के लिए निर्धारित किए गए लर्निंग आउटकम को प्राप्त करने तथा बच्चों के लिए समझते हुए पढ़ने में प्रभावशाली होती हैं। आइए, इन्हें विस्तार से जानें–

अनुमान लगाना

अनुमान लगाने का अर्थ है पाठ पढ़ते हुए अपने मौजूदा ज्ञान और अनुभव के आधार पर यह सोचते जाना कि पाठ में आगे क्या होगा। अच्छे पाठक हमेशा पढ़ने से पहले और पढ़ने के दौरान अनुमान लगाते चलते हैं। पढ़ने से पहले अगर बच्चे अनुमान लगाने लगें तो उन्हें अपनी सोच केंद्रित करने में मदद मिलती है।

अनुमान पर कार्य कैसे करें?

पाठ पढ़ने से पहले: पाठ शुरू करने से पहले बच्चों का ध्यान पाठ के शीर्षक, चित्र या मोटे फॉन्ट में लिखें हुए शब्दों पर आकर्षित कर सकते हैं, और बच्चों से पूछ सकते हैं कि इनके आधार पर वे पाठ के बारे में अनुमान लगाएँ। अगर कोई कहानी सुनाने जा रहे हैं तो पहले केवल सारे चित्र बच्चों को दिखा सकते हैं। शीर्षक और चित्रों के आधार पर अनुमान लगाने से, बच्चों में कहानी के प्रति उत्सुकता बढ़ जाती है। पाठ के अंत में बच्चों से चर्चा कर सकते हैं कि उनके कौन–कौन से अनुमान सही निकले।

इस बात का ध्यान दें कि बच्चे जो भी अनुमान लगाएँ उस अनुमान का कारण उनसे ज़रूर पूछें। बच्चों से पूछें कि– उन्होंने अनुमान चित्र से, शीर्षक से, अपने अनुभव से, किस आधार पर लगाया है? बच्चों के दृष्टिकोण को जानना, समझना और उस पर बात करना बहुत लाभदायी होता है। जब बच्चे अपने दृष्टिकोण स्वयं अपने शब्दों में बताते हैं, और दूसरों के दृष्टिकोणों को सुनते हैं, तो उनमें उच्चस्तरीय चिंतन का विकास होता है।

पढ़ने के दौरान: कहानी पढ़ने के दौरान बीच में रुककर बच्चों से ज़रूर पूछें– ''तुम्हें क्या लगता है, आगे क्या होगा?'' समय–समय पर कहानी बढ़ने के साथ बच्चों की कहानी से अपेक्षाएँ और कल्पनाएँ बदलती रहेंगी और इस तरह बच्चों के अनुमान भी बदल जाएँगे। बच्चों को अपने अनुमान की जाँच करने और उसे बदलने का मौका भी दे सकते हैं।

लेकिन यह भी याद रखें कि कहानी पढ़ने के दौरान इन प्रश्नों की संख्या बहुत ज़्यादा ना हो, इससे बच्चों का ध्यान कहानी सुनने, समझने एवं इसका आनंद लेने से हटकर शिक्षक के प्रश्नों के उत्तर देने में जाएगा। कहानी पढ़कर सुनाने के दौरान 2–3 प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

पढ़ने के बाद : बच्चों से पूछें कि सबने क्या सोचा था/या क्या अनुमान लगाया था कि कहानी में क्या होगा और वास्तव में क्या हुआ? बच्चों के अनुमान कितने नज़दीक थे?

अलग–अलग प्रकार के प्रश्न पूछना

समझ बढ़ने के लिए, अच्छे प्रश्न पूछना सबसे शक्तिशाली और कारगर तरीका हो सकता है। शिक्षक जितने ज्यादा उच्च स्तरीय सवाल पूछते हैं उन पर बच्चों को सोचने का मौका और समय देते हैं, उतना ही बच्चों की सोच, तर्क करने के कौशल और समझने की क्षमता में सुधार आता है। कुछ प्रश्नों के उदाहरण नीचे दिए गए हैं –

(प्रश्नों के प्रकार समझने के लिए हम **'बादल किसके काका'** पाठ का उदाहरण ले रहे हैं।)

1. **पूर्व ज्ञान से जुड़े प्रश्न** : ये प्रश्न बच्चों की कहानी से जुड़े पूर्व ज्ञान को बढ़ने या मौजूदा पूर्व ज्ञान को जागृत करने में सहायक होते हैं। जैसेः– बादल कब ज़ोर–ज़ोर से गरजते हैं?

2. **अनुमान लगाने वाले प्रश्न** : ये प्रश्न बच्चों को अलग अलग संकेतों का उपयोग करते हुए अनुमान लगाने के लिए प्रेरित करते हैं। जैसेः– सूरज कब दिखाई नहीं देता है?

3. **निष्कर्ष निकालने वाले प्रश्न** : पाठ में जो स्पष्ट रूप से नहीं दिया, उससे जुड़े अनुमान लगाने वाले प्रश्न बच्चों को स्वयं निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित करते हैं। जैसेः– यहाँ किस मौसम की बात हो रही है?

4. **विश्लेषण तर्क/वितर्क राय देने से जुड़े प्रश्न** : ये प्रश्न बच्चों को अलग–अलग दृष्टिकोण समझने या अपना दृष्टिकोण बताते हुए उससे जुड़े तर्क देने के लिए प्रेरित करते हैं। जैसेः– बहुत ज्यादा बारिश होने से क्या होता है?

5. **कल्पनाशीलता को बढ़ने वाले प्रश्न** : ये प्रश्न बच्चों को कहानी से हटाकर उनकी कल्पना को नई उड़न देते हैं। जैसेः– जब बारिश नहीं होती है तब क्या होता है?

6. **जीवन से जोड़ने वाले प्रश्न** : ये प्रश्न कहानी को बच्चों से जोड़ने में सहायक होते हैं। जैसेः– जब बारिश होती है तब तुम्हें किस–किस तरह की समस्याएँ होती हैं?

चित्र संयोजक

चित्र संयोजक, किसी भी तरह के पाठ (कहानी या जानकारी वाले) की मुख्य जानकारी या अवधारणा के बीच संबंध दर्शाने वाले चित्र होते हैं।

- ये बच्चों को पाठ में दी गयी जानकारी को व्यवस्थित करने में मदद करते हैं।
- इसके माध्यम से बच्चों को स्पष्ट हो जाता है कि कौनसी जानकारी महत्वपूर्ण है और कौन–सी नहीं।
- घटनाओं के क्रम, अवधारणाओं या घटनाओं के बीच संबंध की जानकारी मिलती है।

आइए, विभिन्न प्रकार के चित्र संयोजक के विषय में जानते हैं–

विवरण मैप/अवधारणा मानचित्र – इसे अवधारणाओं का मानचित्र भी कहते हैं। यह किसी पाठ की केंद्र जानकारी और अन्य विशेषताओं को दर्शाता है। खासकर, अंतर्संबंधों का विवरण देता है।

अनुक्रम चार्ट – इसे क्रमबद्धता चार्ट भी कहते हैं। यह घटनाओं के क्रम या श्रंखला को दर्शाता है।

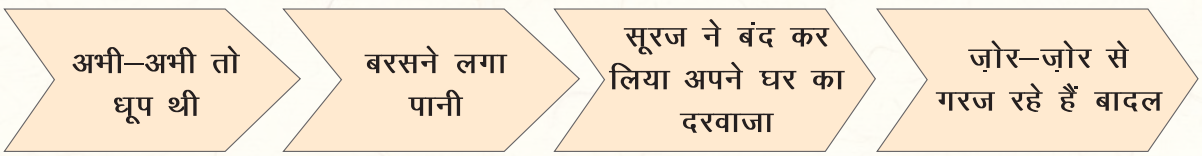

इसी तरह, किसी भी पाठ के ऊपर चित्र संयोजक के द्वारा पाठ पर तर्क, कारण, विश्लेषण, आदि से जुड़े उच्च–स्तरीय समझ पर कार्य कर सकते हैं.

बच्चों के अनुभव और पूर्वज्ञान को सक्रिय करना

अच्छा पृष्ठभूमि ज्ञान और पिछले अनुभव नए अर्थ–निर्माण पर गहरा प्रभाव डालते हैं। बच्चों के पूर्वज्ञान को उकसाने वाले प्रश्न पूछने चाहिए। यह न केवल उनके लिए लाभदायक है जो विषय के बारे में कुछ पहले से जानते हैं, बल्कि उन बच्चों के लिए भी बहुत ही महत्वपूर्ण है जिनके पास पहले से कोई जानकारी नहीं। चर्चा में दूसरों की बात सुनकर उन्हें भी नई जानकारी मिलती है और पढ़े जा रहे पाठ से जुड़ने का मौका मिलता है।

अनुभव एवं पूर्णज्ञान पर कार्य कैसे करें?

बच्चों को बताएँ कि यदि वे अपने पुराने अनुभव और जानकारी को पाठ पढ़ने में इस्तेमाल करेंगे तो उनकी समझ बेहतर होगी। बच्चों का पूर्वज्ञान सक्रिय करने के लिए कुछ इस प्रकार के प्रश्न पूछे जा सकते हैं–

अनुभव से जोड़नाः बच्चों से पूछें– क्या तुमने कभी ऐसा महसूस किया है? क्या तुम्हारे साथ ऐसा कभी हुआ है? इसे पढ़ कर क्या याद आता है?

पूर्वज्ञान से जोड़नाः तुम्हें इसके बारे में और क्या पता है? तुम्हें क्या लगता है, ऐसा क्यों होता है? समझ बढ़ाने के लिए, अच्छे प्रश्न पूछना सबसे शक्तिशाली और कारगर तरीका हो सकता है। यह इस पर निर्भर करता है कि प्रश्न किस तरह के या किन उद्देश्यों से पूछे गए हैं।

सार–संकलन/पुनः सुनाना

दोबारा सुनाने और सार–संकलन करने से मौखिक भाषा प्रवाह विकसित करने में मदद मिलती है। इससे कहानी की संरचना के बोध में सुधार आता है, विचारों को व्यवस्थित करने और तथ्यों व सूचनाओं को क्रमबद्ध करने का अभ्यास होता है। साथ ही, व्यक्तिगत व्याख्याएँ करने और समझते हुए पढ़ने की क्षमता में सुधार आता है। बच्चों को सार संकलित करने और कहानियों को फ़िर से सुनाने के अवसर मिलने चहिए।

बच्चों द्वारा कहानी का सार–संकलित करने की प्रक्रिया कुछ इस प्रकार हो सकती है–

1. शुरुआत में शिक्षक खुद करके दिखा सकते हैं कि कहानी कैसे पुनः अपने शब्दों में सुनाई जाती है।
2. वे क्रम चार्ट या कहानी मानचित्र (स्टोरी मैप) का प्रयोग करके मुख्य तत्वों को चिह्नित कर सकते हैंः जैसे– शीर्षक, कहानी की पृष्ठभूमि (कहानी कहाँ और कब घट रही है), मुख्य पात्र कौन हैं, समस्याएँ, मुख्य घटनाओं का क्रम, समस्या का समाधान, और कहानी कैसे खत्म होती है, आदि।
3. कहानी अपने शब्दों में बताते हुए शिक्षक बीच–बीच में रुक सकते हैं और बच्चों को जोड़ने के लिए कह सकते हैं।
4. धीरे–धीरे बच्चों को चित्र संयोजक की मदद से कहानी पुनः सुनाने के लिए कहें। साथ–ही आवश्यकताअनुसार उनको फ़ीडबैक भी दें कि वे अपने सार संकलन को किस प्रकार बेहतर बना सकते हैं।

बच्चों को प्रश्न बनाने के लिए प्रेरित करना

समझते हुए पढ़ने के दौरान एक कुशल पाठक पाठ के साथ एक तरह का वार्तालाप स्थापित कर लेते हैं। इसलिए कुशल पाठक पढ़ते समय स्वयं से अथवा दूसरों से प्रश्न भी पूछते हैं, यह देखने के लिए कि क्या उनका अनुमान सही है? क्या वे सही समझ रहे हैं, क्या कुछ और है जो उन्होंने नहीं पकड़ा है? इसके लिए बच्चों को यह सिखाना चाहिए कि वे पढ़ते समय स्वयं प्रश्न करते रहें– चाहे खुद से, अपने जोड़ीदार से, समूह के सदस्यों से, या शिक्षक से। इससे उन्हें अपनी समझते हुए पढ़ने की क्षमता की निगरानी करने में मदद मिलेगी।

बच्चों से प्रश्न बनवाने के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया की जा सकती है–

1. बच्चों को छोटे समूह में बाँट दें।
2. फिर उनसे कहें कि अब हर समूह को आपस में चर्चा करके इस कहानी पर कुछ प्रश्न बनाने हैं।
3. इसके बाद हर समूह दूसरे समूहों से अपना प्रश्न पूछ सकते हैं, जिसका बाकी बच्चे उत्तर देंगे।
4. बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए यह भी कहा जा सकता है कि जिस समूह के प्रश्न दूसरों को सोचने पर मज़बूर करेंगे और जो प्रश्न शिक्षक ने पूछे हैं, उनसे भिन्न होंगे तो उस समूह के लिए सभी तालियाँ बजाएँगे। इसका फैसला शिक्षक करेंगे।

ध्यान देने योग्य बातें:

- शुरुआत में प्रश्न बनाते समय बच्चों को थोड़े मार्गदर्शन की ज़रूरत होती है।
- देखने में यह भी आया है कभी–कभी बच्चे शिक्षिका के प्रश्नों की नकल करना भी शुरू कर देते हैं। जैसे– शिक्षिका ने एक प्रश्न का उदाहरण दिया– 'कछुआ कैसे चलता है?' जब उन्होंने बच्चों को प्रश्न बनाने के लिए कहा तो बच्चे इसी प्रश्न की तरह दूसरे प्रश्न बनाने लगे– 'शेर कैसे चलता है?', 'खरगोश कैसे चलता है?' आदि।
- यह आवश्यक है कि बच्चों को कई तरह के उदाहरण दिए जाएँ और कक्षा में आप भी कई तरह के प्रश्न पूछें। जब आप उच्चस्तरीय प्रश्न पूछेंगे तो आपके सहयोग से बच्चे भी उच्चस्तरीय प्रश्न बनाने लगेंगे।

नोट: पाठ्यपुस्तक 'कलरव–3' एवं संबंधित कार्यपुस्तिका पर व्यवस्थित रूप से कार्य किया जाएगा।

भाग 2

कक्षा–3 में भाषा शिक्षण के अकादमिक सत्र की रूपरेखा, कार्य योजना एवं गतिविधियाँ

4. अकादमिक सत्र 2020–21 में कक्षा–3 में भाषा शिक्षण पर कार्य

सत्र 2020–21 में मिशन प्रेरणा के तहत कक्षा–3 में भाषा सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं को समृद्ध करने के उद्देश्य से कुछ सहायक सामग्रियों को शामिल किया गया है। इस भाग में हम इन पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

प्रेरणा सूची की दक्षताएँ

यदि हम प्रेरणा सूची में हिंदी (कक्षा–3) की 14 दक्षताओं को पढ़ें तो यह समझना कठिन नहीं होगा कि इन पर कार्य करने के लिए व्यवस्थित रूप से पूरे अकादमिक सत्र में कार्य करना होगा। इसके लिए पाठ्यपुस्तक 'कलरव–3' के साथ–साथ सहायक सामग्री को आधार बनाकर शिक्षण कार्य करने की योजना है।

कक्षा–3 में भाषा शिक्षण के कालांश

इस वर्ष कक्षा–3 में हिंदी भाषा शिक्षण के लिए 40–40 मिनट के 2 कालांश निर्धारित किए गए हैं।

कालांश–1	कालांश–2
मौखिक कार्य और पढ़कर समझने का अभ्यास	पाठ्यपुस्तक आधारित शिक्षण

पहला कालांशः इस कालांश में भाषा शिक्षण के सहायक शिक्षण सामग्री पर कार्य किया जाना है। इस सत्र में कुल चार प्रकार की अलग–अलग शिक्षण सामग्रियाँ उपलब्ध होंगी। सभी सामग्रियों का निर्माण प्रेरणा सूची की दक्षताओं के अनुसार किया गया है। सहायक शिक्षण सामग्री एवं प्रेरणा सूची की दक्षताओं के संरेखण पर आगे बात की जाएगी। इस कालांश में पूरे वर्ष व्यवस्थित रूप से इन दो घटकों पर मुख्य रूप से कार्य किया जाएगाः

- मौखिक भाषा विकास एवं लेखन कार्य
- पठन–अभ्यास (समझ के साथ)

आइए, अब हम देखते हैं कि ये सहायक सामग्रियाँ कौन–सी हैं एवं शिक्षण योजना में इन्हें कैसे उपयोग में लाया जाएगा।

सहायक शिक्षण सामग्री की सूची	
सामग्री का नाम	**उपयोगिता**
चित्र चार्ट	इस सत्र में अलग–अलग विषयों पर 1 सेट में कुल 10 चित्र चार्ट दिए जाएँगे। इसे मौखिक अभिव्यक्ति व वर्णन एवं मौखिक शब्दावली विकास की गतिविधि–चित्र चार्ट पर चर्चा के दौरान किया जाएगा। इन पर पूरे वर्ष कार्य करने की योजना है। दिए गए चित्र चार्ट सेट के अलावा अन्य चित्र चार्ट को भी उपयोग में लाया जाना चाहिए।
कविता पोस्टर	इस सत्र में कुल 5 कविता पोस्टर दिए जाएँगे। इनका उपयोग कविताओं को गाने और पठन पर कार्य करने के लिए किया जायेगा। इन पर पूरे वर्ष कार्य करने की योजना है।
कहानी पोस्टर	इस सत्र में कुल 5 कहानी पोस्टर दिए जाएंगे। इनका उपयोग प्रवाहपूर्ण पठन एवं समझ के साथ पठन हेतु किया जाएगा। इन पर पूरे वर्ष कार्य करने की योजना है।
सहज–3	सहज–3 की प्रति सभी बच्चों को दी जाएगी। इसका उपयोग पठन–अभ्यास के लिए किया जायेगा। इसका निर्माण बच्चों को पठन–अभ्यास के मौके देते हुए प्रवाहपूर्ण पठन की ओर ले जाना तथा समझ के साथ पढ़ने में सक्षम बनाने के उद्देश्य से किया गया है। यह कक्षा 3 के बच्चों के पठन स्तर को ध्यान में रखकर बनाया गया है।

दूसरा कालांशः इस कालांश में पाठ्यपुस्तक 'कलरव–3' पर व्यवस्थित रूप से कार्य किया जायेगा। शिक्षकों से यह अपेक्षित है कि वे 'कलरव–3' के प्रत्येक पाठ पर प्रेरणा सूची में दिए गए दक्षताओं को आधार बनाकर कार्य करें। इसके लिए शिक्षकों को कक्षा में जाने से पूर्व की तैयारी महत्वपूर्ण होगी और उन्हें हर पाठ के शिक्षण प्रक्रिया के दौरान एक से अधिक दक्षताओं पर साथ–साथ कार्य करना होगा। 'कलरव–3' एवं प्रेरणा सूची की दक्षताओं के संरेखण पर आगे विस्तृत जानकारी दी गयी है। इस कालांश में भाषा शिक्षण के सभी घटकों पर कलरव–3 एवं प्रेरणा सूची को आधार बनाकर कार्य किया जायेगा। इसमें सुनकर समझना एवं प्रतिक्रिया देना, मौखिक शब्दावली एवं अभिव्यक्ति, पठन एवं पढ़कर समझने के साथ–साथ लेखन पर पूरे वर्ष कार्य किया जायेगा।

5. सप्ताहवार वार्षिक शिक्षण योजना

वर्ष 2020–21 में कक्षा–3 में कुल 16 सप्ताह के शिक्षण कार्य की योजना है। इस योजना को साप्ताहिक रूप में विभाजित किया गया है। प्रत्येक सप्ताह के लिए 6 दिन का शिक्षण कार्य मानते हुए दैनिक कार्य किया जाए। दैनिक शिक्षण कार्य में 40–40 मिनट के 2 कालांशों में कार्य होगा। इन दोनों कालांशों के सप्ताहवार शिक्षण योजना के लिए नीचे एक तालिका दी गई है। इन कालांशों में कैसे कार्य करना है, इससे संबंधित दिशानिर्देश आगे दिए गए हैं:

सप्ताह	महीना	प्रथम कालांश (सहायक शिक्षण सामग्री)	द्वितीय कालांश (पाठ्यपुस्तक)
1	सितंबर	चित्र पर चर्चा : चार्ट : 'खेल' पोस्टर : अलमारी सृजनात्मक कार्य सहज : 3* पाठ : तोता	पाठ 1 : प्रार्थना (2 दिन) पाठ 2 : मुर्गी और लोमड़ी (4 दिन)
2	सितंबर	चित्र पर चर्चा : चार्ट : 'बादल' पोस्टर : भालू और मदारी सृजनात्मक कार्य सहज : 3 पाठ : 2	पाठ 3 : बादल किसके काका? (4 दिन) पाठ 4 : तालाब में चाँद (2 दिन)
3	सितंबर	चित्र पर चर्चा : चार्ट : 'दंगल' पोस्टर : रामसहाय की साइकिल सृजनात्मक कार्य सहज : 3 पाठ : 1	पाठ 4 : तालाब में चाँद (2 दिन) पाठ 5 : साहसी सीमा (4 दिन)
4	अक्टूबर	चित्र पर चर्चा : चार्ट : 'खेत' पोस्टर : हाथी सृजनात्मक कार्य सहज : 3 पाठ : 3	कितना सीखा? (2 दिन) पाठ 6 : सबसे पहले (4 दिन)
5	अक्टूबर	चित्र पर चर्चा : चार्ट : 'होली' पोस्टर : मेंढक का गाना सृजनात्मक कार्य सहज : 3 पाठ : 4	पाठ 7 : इसमें क्या शक है? (4 दिन) अपने आप–1

6	अक्टूबर	चित्र पर चर्चा : चार्ट : 'सड़क' पोस्टर : बरसात सृजनात्मक कार्य सहज : 3 पाठ : 5	पाठ 8 : अगर पेड़ भी चलते होते (2 दिन) पाठ 9 : वाराणसी की यात्रा (4 दिन)
7	नवम्बर	चित्र पर चर्चा : चार्ट : 'मेला' पोस्टर : काशीफल सृजनात्मक कार्य सहज : 3 पाठ : 6	पाठ 10 : बन्दर बाँट (5 दिन)
8	नवम्बर	चित्र पर चर्चा : चार्ट : 'नदी' पोस्टर : पतंग और बकरी सृजनात्मक कार्य सहज : 3 पाठ : 7	कितना सीखा–2 (2 दिन) पाठ 11 : पहेलियाँ (4 दिन)
9	नवम्बर	चित्र पर चर्चा : चार्ट : 'परिवार' पोस्टर : चींटी सृजनात्मक कार्य सहज : 3 पाठ : 8	अपने आप–2 (2 दिन) पाठ 12 : चाँद का कुर्ता 3 दिन)
10	दिसंबर	चित्र पर चर्चा : चार्ट : 'बाजार' पोस्टर : दो चींटी सृजनात्मक कार्य सहज : 3 पाठ : 9	कितना सीखा–3 (2 दिन) पाठ 13 : सीख (4 दिन)
11	दिसंबर	सहजः 3 पाठ : 10 और 11	पाठ 14 : माथा पच्ची (2 दिन) पाठ 15 : जड़ और फूल (4 दिन)
12	जनवरी	सहजः 3 पाठ : 12 और 13	पाठ 16 : घुमक्कड़ तारक (4 दिन) अपने आप–3 (2 दिन)
13	जनवरी	सहज : 3 पाठ : 14 और 15	पाठ 17 : लोक गीत (2 दिन) पाठ 18 : पत्र (4 दिन)
14	फरवरी	सहज : 3 पाठ : 16 और 17	पाठ 19 : सुभाष चन्द्र बोस (4 दिन) पाठ 20 : भारत है मेरा घर (2 दिन)

15	फरवरी	सहज : 3 पाठः 18 और बताओ, मैं कौन हूँ?	पाठ 20 : भारत है मेरा घर (2 दिन) पाठ 21 : घमंडी का बाग़ (4 दिन
16	फरवरी	सहज : 3 : कहानी बनाना	अपने आप : 4 (2 दिन) कितना सीखा (3 दिन) शब्द खेल (1 दिन)

*पहले कालांश में वर्णित सहज–3 बच्चों के पठन–अभ्यास के लिए एक पुस्तिका है जिसमें चित्र सहित विविध तरह के छोटे–छोटे पाठ दिए गए हैं। इसे केवल पठन अभ्यास के लिए काम में लाया जाएगा। इस पर लेखन का कार्य करवाना प्रस्तावित नहीं है।

विशेष ध्यान दें:

1. कलरव–3 के पाठों पर कार्य करने के लिए प्रत्येक पाठ के लिए कुछ अनुमानित दिन तय किये गए हैं। हो सकता है कि किसी ख़ास पाठ के लिए ज्यादा या कम समय भी लग सकता है।

2. सभी बच्चों के सीखने की गति समान नहीं होती है। इस कारण से हमारी कक्षा में अक्सर ऐसे बच्चे पाए जाते हैं जो भाषा कौशलों में सामान्य से निचले स्तर पर होते हैं। अक्सर ऐसे बच्चे अपने आप को कक्षा की शिक्षण प्रक्रिया से जोड़ नहीं पाते हैं, जिसके कारण भाषाई कौशलों में पिछड़े हुए बच्चे पिछड़ते ही चले जाते हैं। इस प्रकार के बच्चे भाषा में पिछड़े होने के कारण अन्य विषयों में भी अपनी समझ को बढ़ाने में सक्षम नहीं हो पाते हैं। ऐसे बच्चों पर अपनी कक्षा में विशेष ध्यान दें और उनके बुनियादी कौशलों को विकसित करने के लिए उपचारात्मक शिक्षण कार्य करें।

3. नियमित एवं सावधिक आकलन के आधार पर पुनरावृत्ति की योजना बनाएँ और उस पर कार्य करें। जो बच्चे पीछे छूट रहें है, उनके साथ नियमित रूप से कार्य करना उपयोगी होगा। आकलन एवं पुनरावृत्ति पर हम आगे बातचीत करेंगे।

4. अगर किन्हीं कारणों की वजह से किसी सप्ताह में निर्धारित शिक्षण योजना पर पूर्ण रूप से कार्य नहीं हो पाए तो शिक्षक अगले सप्ताह के निर्धारित कार्य शुरू करने के पहले सप्ताह के छूटे हुए कार्यों एवं गतिविधियों को पहले पूरा कर लें।

सहायक सामग्री / प्रेरणा सूची की दक्षताएँ	H301	H302	H303	H304	H305	H306	H307	H308	H309	H310	H311	H312	H313	H314
कविता	✓													
मौखिक खेल गतिविधि			✓	✓	✓									
कविता पोस्टर	✓													
कहानी पोस्टर	✓	✓	✓	✓	✓									
सृजनात्मक कार्य			✓											
कहानी पर कार्यः														
शिक्षक द्वारा मौखिक रूप से कहानी सुनाना	✓	✓	✓	✓	✓									
शिक्षक द्वारा कहानी पढ़कर सुनाना	✓	✓	✓	✓	✓									
बच्चों द्वारा अपने शब्दों में कहानी सुनाना	✓	✓	✓	✓	✓									
चर्चाः														
चित्र चार्ट पर चर्चा			✓	✓	✓									
अनुभवों पर चर्चा			✓	✓										
कहानी पर कार्य एवं चर्चा से संबंधित लेखन कार्य													✓	✓
पठनः														
आदर्श वाचन	✓	✓	✓	✓	✓	✓								
मार्गदर्शन में पठन	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓		
स्वतंत्र पठन						✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓		

7. प्रथम कालांश (सहायक सामग्री) पर कार्य करने की रणनीति

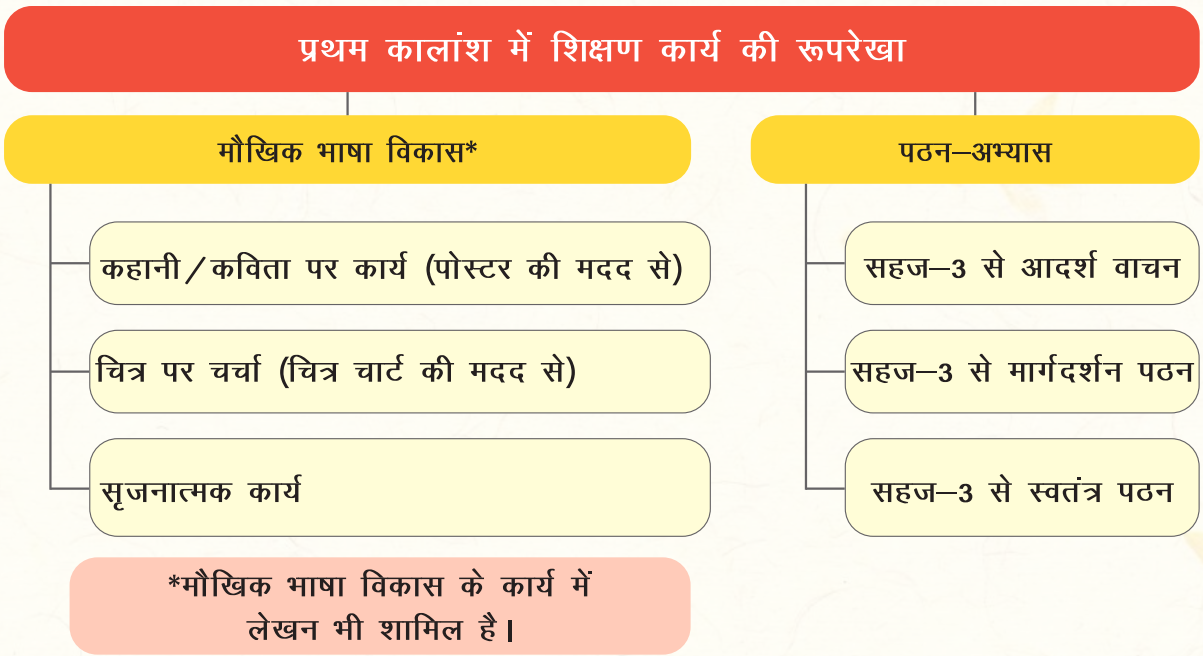

16 सप्ताह की शिक्षण योजना में प्रथम 10 सप्ताह मौखिक भाषा विकास और पठन दोनों पर तीन–तीन दिन का कार्य है। 11वें सप्ताह से सिर्फ पठन का कार्य होगा।

कार्य	सप्ताह 1–10	सप्ताह 11–16
मौखिक भाषा विकास पर कार्य	✓ (सप्ताह में 3 दिन)	
पठन पर कार्य	✓ (सप्ताह में 3 दिन)	✓ (सप्ताह में 6 दिन)

किताबों का उपयोग

कक्षा–3 के बच्चों को विविध प्रकार की पुस्तकें पढ़ने के लिए उपलब्ध करवाई जानी चाहिए। बच्चों को पढ़ने के मौके देने के साथ–साथ चर्चा करना भी महत्वपूर्ण है। इस चर्चा से बच्चों को पढ़ने के प्रति प्रेरित करने, रूचि जगाने और पढ़ने में आई किसी समस्या को समझने में मदद मिलेगी। इसके लिए कई तरह की गतिविधियाँ की जा सकती हैं, जैसे – पढ़ने के बाद बच्चों को पात्रों की नकल करवाना, किसी किताब पर प्रश्नोत्तरी आयोजित करना, किसी खास जानवर से जुड़े कहानी पर सभी बच्चों से कहानी सुनना, पढ़ी गयी कहानी की किताब का नाम बदलकर बताना, इत्यादि। गतिविधियाँ ऐसी हों जिनसे बच्चों को पढ़ने के प्रति उत्सुकता, रोचकता और आत्मविश्वास का एहसास हो।

8. प्रथम कालांश में सहायक सामग्री पर कार्य: सप्ताह 1–10

प्रथम कालांश में सप्ताह संख्या 1 से 10 तक निम्नलिखित गतिविधियाँ आयोजित की जाएँगी:

कार्य	गतिविधि (40 मिनट)	सामग्री	समय
मौखिक भाषा विकास	कहानी/कविता पर कार्य	पोस्टर	सप्ताह का पहला दिन
	चित्र पर चर्चा	चित्र चार्ट	सप्ताह का दूसरा दिन
	सृजनात्मक कार्य	संदर्शिका	सप्ताह का तीसरा दिन
पठन (सहज–3)	पढ़कर सुनाना और चर्चा	सहज–3	सप्ताह का चौथा दिन
	मार्गदर्शन में बच्चों द्वारा पठन	सहज–3	सप्ताह का पाँचवा दिन
	बच्चों द्वारा स्वतंत्र पठन	सहज–3	सप्ताह का छठा दिन

ध्यान देने योग्य बातें:

- एक दिन में एक ही तरह की गतिविधि करें। प्रत्येक गतिविधि को करने का तरीका आगे बताया गया है।
- मौखिक भाषा विकास के कार्य में लेखन से जुड़े कार्य भी होंगे। गतिविधि के विवरण में आगे इसका जिक्र किया गया है।
- सभी गतिविधियों में बच्चों की पूर्ण और सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना आवश्यक है। कई कार्य ऐसे हैं जहाँ बच्चे समूह बनाकर कार्य करेंगे। इसलिए समूह बनाते समय इस बात का ध्यान रखा जाए कि समूह में सभी बच्चे खुलकर भाग ले रहे हैं या नहीं।
- अभी भी कुछ बच्चे ऐसे होंगे जो पूरी कक्षा में सबके सामने हिंदी बोलने में संकोच करते हों, उनके लिए उनकी भाषा की इस्तेमाल का मौका दें और आगे प्रोत्साहित करते रहें ताकि वे धीरे–धीरे अपने संवाद में हिंदी का उपयोग करें।

मौखिक भाषा विकास की गतिविधियाँ

प्रथम कालांश में सप्ताह के पहले तीन दिन मौखिक भाषा विकास से जुड़ी गतिविधियाँ होंगी:

कहानी/कविता (पोस्टर) पर कार्य

चित्र (चार्ट) पर कार्य

सृजनात्मक मौखिक कार्य

कविता/कहानी (पोस्टर) पर कार्यः इस गतिविधि से बच्चों में लिखित पाठ को समझने और इनसे जुड़ी अपने समझ और अनुभव को अभिव्यक्त करने का मौका मिलेगा। बच्चों के लिए कक्षा–कक्ष में प्रिंट–समृद्ध वातावरण तैयार करने में चार्ट/पोस्टर और अन्य सामग्री मदद करते हैं।

इस गतिविधि के लिए 10 सप्ताह के लिए कुल 10 पोस्टर हैं – 5 कविता से संबंधित और 5 कहानी से संबंधित। पोस्टरों को कक्षा की दीवारों पर चिपकाएँ। इन्हें दीवारों पर इस तरह चिपकाएँ कि बच्चे उसे देखकर पढ़ पाएँ।

साप्ताहिक योजना के अनुसार कहानी या कविता पोस्टर का चयन करें और फिर उसे काम में लें।

कविता पोस्टर पर कैसे कार्य करें?

प्रेरणा सूची की दक्षताएँः H301-H305

कविता पोस्टर पर कार्य करने के लिए निम्नलिखित चरणों को पूरा करेंः

3–5 मिनट	कविता पोस्टर से कविता एकबार पढ़कर सुनाएँ।
7–8 मिनट	3–4 बच्चों को बारी–बारी से बुलाकर उन्हें पढ़ने को कहें।
5–7 मिनट	अब 2–3 बार सभी के साथ कविता लय के साथ गाएँ।
10–12 मिनट	कविता पर समझ बनाने के लिए बच्चों के साथ बातचीत करें। जैसे, कविता किसके बारे में है? इसमें क्या हो रहा है? इत्यादि। अगर कोई कठिन शब्द है तो उस पर भी चर्चा करें।
7–8 मिनट	बच्चों को कविता से संबंधित लेखन कार्य करवाएँ। जैसे, कविता के बारे में 1 वाक्य लिखना, चित्र बनाना और उसके बारे में लिखना, इत्यादि

ध्यान देने योग्य बातेंः

- अगली बार पढ़ने के लिए अन्य बच्चों को मौका दें ताकि सभी बच्चों को इस कार्य में मौका मिले। एक ही दिन 3–4 से ज्यादा बच्चों से पढ़वाने का कार्य ना करें।
- जब बच्चे पढ़ रहे हों, आप बीच–बीच में मदद कर सकते हैं।
- सभी बच्चों को बातचीत में जोड़ने की कोशिश करें।
- पोस्टर के विषय से जुड़ी कोई कविता जो बच्चों ने पिछली कक्षाओं में पढ़ी हो, उस पर भी संक्षिप्त चर्चा करें।
- लेखन के दौरान गलतियों पर अधिक ध्यान ना देकर उनके अर्थ और भाव पर गौर करें और बच्चों को बताने के लिए प्रेरित करें कि उन्होंने ऐसा क्यों लिखा या बनाया है।
- लेखन कार्य को कक्षा की दीवार "बच्चों के कार्य" कोने पर इस तरह चिपका दें ताकि सारे बच्चे उसे देख पाएँ।

कहानी पोस्टर पर कैसे कार्य करें?

प्रेरणा सूची की दक्षताएँ: H301-H305

कहानी पोस्टर पर कार्य करने के लिए निम्नलिखित चरणों को पूरा करें:

3–5 मिनट	कहानी पोस्टर से बच्चों को एक बार कहानी पढ़कर सुनाएँ।
7–8 मिनट	3–4 बच्चों को बारी–बारी से बुलाकर उन्हें पढ़ने को कहें। (अगला पोस्टर पढ़ने के लिए अन्य बच्चों को मौका दें।)
5–7 मिनट	कहानी पर समझ बनाने के लिए बच्चों के साथ बातचीत करें। जैसे, कहानी में क्या हो रहा है? इस कहानी में कौन क्या करता है? इत्यादि
15–20 मिनट	चर्चा को आगे बढ़ाते हुए कल्पना, तर्क, आदि वाले प्रश्नों की मदद से विस्तृत चर्चा करें। जैसे, अगर कहानी में..... नहीं होता तो क्या हो सकता था, इस कहानी को आगे बढ़ाना, इत्यादि
7–8 मिनट	बच्चों को कहानी से संबंधित लेखन कार्य करवाएँ। जैसे, कहानी कैसी थी? कहानी की तीन सबसे अच्छी बातें? इत्यादि

ध्यान देने योग्य बातें:

- अगली बार पढ़ने के लिए अन्य बच्चों को मौका दें ताकि सभी बच्चों को इस कार्य में मौका मिले। एक ही दिन 3–4 से ज्यादा बच्चों से पढ़वाने का कार्य ना करें।
- जब बच्चे पढ़ रहे हों, आप बीच–बीच में मदद कर सकते हैं।
- सभी बच्चों को बातचीत में जोड़ने की कोशिश करें।
- चूँकि कहानियाँ छोटी हैं, आप बच्चों से इस कहानी को आगे बढ़ाने, कहानी में बदलाव लाने, इत्यादि कार्य करवा सकते हैं।
- लेखन के दौरान गलतियों पर अधिक ध्यान ना देकर उनके अर्थ और भाव पर गौर करें और बच्चों को बताने के लिए प्रेरित करें कि उन्होंने ऐसा क्यों लिखा या बनाया है।
- लेखन कार्य को कक्षा की दीवार "बच्चों के कार्य" कोने पर इस तरह चिपका दें ताकि सारे बच्चे उसे देख पाएँ।

चित्र चार्ट पर कार्य: इस गतिविधि से बच्चों में अनुभव को साझा करने, कल्पना करने, अनुमान लगाने, तर्क करने जैसे महत्वपूर्ण कौशलों में निखार आता है। साथ ही, समूह में एक दूसरों की राय सुनना, अपनी राय बनाना और अपनी बात को व्यवस्थित तरीके से रखना– जैसी दक्षताओं में भी वृद्धि होती है।

प्रेरणा सूची की दक्षताएँ: H302-H305

10 सप्ताह के लिए कुल 10 चित्र चार्ट हैं जो अलग–अलग विषयों पर आधारित हैं। प्रत्येक चित्र चार्ट की दो प्रतियाँ दी गयी हैं। साप्ताहिक योजना के अनुसार चित्र चार्ट का चयन करें और उसे काम में लें।

चित्रा चार्ट पर कैसे कार्य करें?

चित्र चार्ट पर कार्य करने के लिए इन चरणों को पूरा करें: (उदाहरण–खेत)

3–5 मिनट	बच्चों को दो समूहों में बाँटे और प्रत्येक समूह को एक चित्र चार्ट दें। बच्चे घेरे में बैठें ताकि सभी चित्र देख पाएँ।
10–12 मिनट	बच्चों से चित्र चार्ट पर चर्चा करें। आप कुछ सरल प्रश्नों की मदद से बच्चों को आपस बात करने के लिए प्रोत्साहित करें। (जैसे, यह चित्र कहाँ का है?, चित्र में खेत में क्या हो रहा है? इत्यादि)
15–18 मिनट	अब बच्चों से अनुभव, कल्पना, अनुमान, तर्क, इत्यादि वाले प्रश्न करें और उनके उत्तर पर पूरे समूह में चर्चा करवाएँ। (जैसे, अगर एक साल बारिश ना हो तो खेत में क्या होगा? खेत में फसल के लिए पानी कहाँ–कहाँ से मिलता है? इत्यादि)
12–15 मिनट	चर्चा के बाद सभी बच्चों को छोटे–छोटे समूहों में बाँटे (4–5 बच्चों के) और उन्हें इस चित्र से जुड़ी 5 बातें लिखकर बताने को कहें, या ऐसा ही एक चित्र बनाकर अपने गाँव के खेत को दिखाने को कहें। फिर बच्चों के लेखन कार्य पर चर्चा करें।

ध्यान देने योग्य बातें:

- साप्ताहिक योजना को ध्यान से देखें और जिस चित्र चार्ट पर काम करना है, उसकी दोनों प्रतियाँ निकाल लें।
- बच्चों के समूहों को अलग–अलग जगह बिठाएँ ताकि बच्चे आराम से चित्र देख पाएँ और बातचीत कर पाएँ। सभी बच्चों को बातचीत में जोड़ने की कोशिश करें।
- ज्यादातर प्रश्नों के उत्तर अलग–अलग हो सकते हैं इसलिए सही–गलत की जगह बच्चों से उत्तर के तर्क पर बातचीत करें।
- लेखन के दौरान गलतियों पर अधिक ध्यान ना देकर उनके अर्थ और भाव पर गौर करें और बच्चों को बताने के लिए प्रेरित करें कि उन्होंने ऐसा क्यों लिखा या बनाया है।
- लेखन कार्य को कक्षा के दीवार "बच्चों के कार्य" कोने पर इस तरह चिपका दें ताकि सारे बच्चे उसे देख पाएँ।

सृजनात्मक मौखिक कार्य: इस गतिविधि से बच्चों को अपनी मौखिक भाषा कौशलों के उपयोग कर रोचक सृजनात्मक कार्य करने का मौका मिलेगा। साथ ही, वे किसी कार्य में सामूहिक जिम्मेदारी निभाने जैसे महत्त्वपूर्ण अनुभव भी प्राप्त करेंगे।

इस संदर्शिका में सृजनात्मक कार्य के लिए कुल 20 गतिविधियाँ दी गयी हैं जिन्हें आप क्रम से कक्षा में करवा सकते हैं। एक दिन में अधिकतम दो गतिविधि ही करवाएँ। गतिविधि करवाने के तरीके, समय, सामग्री इत्यादि के बारे में विस्तृत जानकारी आगे दी गयी है:

प्रेरणा सूची की दक्षताएँ: H303

समूह में सृजनात्मक कार्य कैसे करवाएँ?

- इस संदर्शिका में दी गई गतिविधियों से दो गतिविधियों का चुनाव करें और इनके लिए तैयारी कर लें। उससे संबंधित निर्देश एवं प्रक्रिया को पढ़ें और उपयोग में आने वाली सारी सामग्रियों को भी पहले से तैयार रखें।
- बच्चों को समूह में बाँटे। हर समूह में बच्चों की संख्या बराबर रखें।

- सारे समूह बनाने के बाद उन्हें सर्वसम्मति से अपना ग्रुप लीडर चुनने को कहें। ग्रुप लीडर यह सुनिश्चित करेगा/करेगी कि ग्रुप का हर एक सदस्य गतिविधि में हिस्सा रहा/रही है।
- सभी समूहों को कार्य समझाएँ और यह सुनिश्चित करें कि सभी समूहों ने अच्छे से कार्य कर लिया हैं। इसका ध्यान रखें, क्योंकि शायद शुरुआत में बच्चों को गतिविधि के एक चरण से दूसरे चरण में जाते वक़्त थोड़ा समय लग सकता है।
- प्रस्तुति के लिए समूह के हर बच्चे की भागीदारी अपेक्षित है। अगर प्रस्तुति का समय कम है तो उन बच्चों को प्रस्तुत करने को प्रोत्साहित करें और बोलने के लिए प्रेरित करें जो अपनी समझ को दूसरों से साथ साझा करने में हिचकते हैं।

बच्चों को समूह में कैसे बाँटे (इनमें से कोई भी तरीका अपना सकते हैं):

- एक कटोरे में 5 अलग–अलग रंग के पेपर की पर्ची रखें। याद रहे कि अलग–अलग रंग की पर्चियों की संख्या एक बराबर हो और कक्षा के हर एक बच्चे के लिए हो। हर बच्चे के पास आप इस कटोरे को लेकर जाएँ और आँख बंद करके एक पर्ची उठाने को कहें। कक्षा के 5 अलग–अलग जगह पर इन रंगों का पेपर लगा दें या रंगों के नाम को लिख दें। अब बच्चों को रंगों के आधार पर अपने–अपने समूह में जाने को कहें।
- आप अलग–अलग शब्दों का वर्ग बना दें। जैसे जानवर, पक्षी, सब्जी, फल एवं फूल। पर्चियों पर हर वर्ग के 5 चीजों के नाम लिख दें। जैसे, जानवर– चूहा, बंदर, हाथी, बकरी और शेर। पर्ची बाँटने के पहले ही बच्चों को इन वर्गो के बारे में बताएँ कि पर्चियों में 5 जानवरों, 5 पक्षियों, 5 सब्जियों, 5 फलों एवं 5 फूलों के नाम लिखे हैं। हर बच्चे को एक–एक पर्ची उठाने को कहें और और उन्हें इन्हीं वर्गों में बँटकर समूह में कार्य करने को दें।
- आप अपनी कक्षा में बच्चों की संख्या के अनुसार आइसक्रीम स्टिक रखें। हर स्टिक पर एक–एक बच्चे का नाम लिखा हों। सभी स्टिक को एक साथ बांध कर रखें। 5 बच्चों को अपनी मर्ज़ी से आगे आने को कहें और बारी–बारी से 5–5 स्टिक निकालने को कहें। जब पहले बच्चे ने 5 स्टिक निकाल लिए हो तो स्टिक पर आए हुए बच्चों को एक समूह बन जाने को कहें। इसी प्रकार, बाकी 4 बच्चों को भी 5–5 स्टिक निकालने को कहें और समूह बनवाएँ।

इसके अलावा आप अपनी मर्ज़ी से भी समूह बना सकते हैं। इसी तरह, आप किसी मनोरंजक तरीके से जोड़े में बच्चों को बाँट सकते हैं।

बच्चों को मार्गदर्शन और प्रोत्साहन

- बच्चों द्वारा गतिविधि करते समय आप कक्षा में घूम–घूम कर उनके कार्य का अवलोकन करें और उन्हें ज़रूरी मदद प्रदान करें।
- हर समूह अलग–अलग उत्तर लेकर आ सकता है। इनमें सही या गलत की पाबंदी नहीं है इसलिए बेहतर यही होगा कि सही या गलत के ढांचे या मान्यताओं में ना समय लगाया जाए। ये सारी गतिविधियाँ बच्चों की समझ को सुदृढ़ करने के लिए है। अगर बच्चे के काम को सही या गलत के मापदण्डों से देखेंगे तो बच्चे इन गतिविधियों में भाग लेने से और उत्तर देने से कतराने लगेंगे। उदाहरण– ''यह सही नही है।'' इसके बजाए यह कहना उचित होगा– "अगर आप इसे ऐसा लिखे

तो बेहतर होगा या आपको क्या लगता है कि इसे और बेहतर कैसे बनाया जा सकता है?

- अगर बच्चे अपेक्षित तरीके से कार्य नहीं कर पा रहे हों तो आप उन्हें सही उत्तर देने के बजाए सुझाव दें और बेहतर करने के लिए प्रोत्साहित करें। बच्चों को यह महसूस कराना कि आप उन पर विश्वास करते हैं और उनकी मदद के लिए उनके साथ खड़े हैं, उनके समग्र विकास के लिए अति आवश्यक है।

1. साइकिल बनाओ, काम बताओ	
समय	10–15 मिनट में समूह में कार्य होगा और प्रस्तुति के लिए हर समूह को 2 मिनट का समय दिया जाएगा।
प्रक्रिया	• शिक्षक बच्चों को 5 छोटे समूह में बाँटें और हर समूह को साइकिल का चित्र बनाकर उसके भागों के नाम लिखने को कहें। प्रत्येक भाग के कार्य को भी बताने को कहें। • समूह में कार्य करने के बाद शिक्षक बारी–बारी से हर समूह को कक्षा में प्रस्तुति के लिए आगे बुलाएँ। • गतिविधि समाप्त होने के बाद समूह कार्य के पेपर को कक्षा के 'बच्चों के कार्य' के कोने में लगा दें।
सामग्री	हर समूह के लिए एक पेपर और लेखन सामग्री
2. पंखा बनाओ, काम बताओ	
समय	10–15 मिनट में समूह में कार्य होगा और प्रस्तुति के लिए हर समूह को 5 मिनट का समय।
प्रक्रिया	• शिक्षक बच्चों को 5 छोटे समूह में बाँटें और हर समूह को पंखे का चित्र बनाकर उसके भागों के नाम लिखकर उसके कार्य को बताने को कहें। (समूह अपनी इच्छा से कोई भी पंखा बना सकते हैं। • समूह में कार्य करने के बाद शिक्षक बारी–बारी से हर समूह को कक्षा में प्रस्तुति के लिए आमंत्रित करें। • गतिविधि समाप्त होने के बाद समूह कार्य के पेपर को कक्षा के 'बच्चों के कार्य' के कोने में लगा दें।
सामग्री	हर समूह के लिए एक पेपर और लेखन सामग्री
3. अपने सहपाठी को बेहतर जानो	
समय	15 मिनट में जोड़ो में कार्य, प्रस्तुति के लिए हर जोड़े को 2–3 मिनट का समय दिया जाएगा।
प्रक्रिया	• शिक्षक बच्चों को जोड़ों में बाँटें और हर जोड़े को अपने सहपाठी के लिए एक शुभकामना कार्ड (greeting card) बनाने को कहें। • शुभकामना कार्ड पर कार्य करने से पहले आपस में जोड़ीदार एक दूसरे के बारे में जानने का प्रयास करेंगे। वह एक दूसरे की पसंद नापसंद पर चर्चा व सवाल करेंगे। चर्चा उनके पसंद के लोग/चीज़, उनके प्रिय मित्र, घर के लोग, खाना, खेल आदि पर हो सकती है।

	• इसके बाद हर बच्चा शुभकामना कार्ड के कवर पर अपने सहपाठी के पसंद के लोगों/चीज़ों का चित्र बनाकर उसकी पसंद के रंग भरेंगें और एक संदेश लिखेंगे। • जोड़ों में कार्य करने के बाद शिक्षक बारी–बारी से हर जोड़े को अपने–अपने कार्ड को पढ़कर बताने के लिए आमंत्रित करें। कार्ड पढ़ने के बाद बारी–बारी से सभी अपनी भावनाओं को भी व्यक्त करेंगें। शिक्षक इसके लिए कुछ इस तरह के प्रश्न कर सकते हैं, जैसे– अपने मित्र के लिए शुभकामना कार्ड बनाते हुए कैसा लगा? अपने मित्र के बारे में कोई एक अच्छी चीज़ बताना चाहोगे? • गतिविधि समाप्त होने के बाद बच्चों को शुभकामना कार्ड घर ले जाकर अपने परिवार के लोगों को दिखाने को कहें।
सामग्री	हर बच्चे के लिए एक पेपर और लेखन एवं चित्रकारी के लिए सामग्री
4. अपने प्रियजन के लिए शुभकामना कार्ड बनाना	
समय	यह एक व्यक्तिगत कार्य होगा। इस कार्य को करने के लिए कुल 10 मिनट होंगे और साझा करने के लिए इच्छुक बच्चों को बारी–बारी से 1–2 मिनट का समय दिया जाएगा।
प्रक्रिया	• शिक्षक हर बच्चे को अपने घर, परिवार या प्रियजनों के लिए एक शुभकामना कार्ड (greeting card) बनाने को कहें। • शुभकामना कार्ड के कवर पर बच्चे अपनी मर्ज़ी से कोई भी चित्र बना सकते हैं। कार्ड के अंदर वे अपने मन की बात या कोई संदेश, कुछ भी लिख सकते हैं। • बच्चों को संदेश साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें। परंतु अगर कोई बच्चा कक्षा में यह साझा नहीं करना चाहता/चाहती है तो उन पर किसी भी तरह का दबाव ना डालें। गतिविधि समाप्त होने के बाद बच्चों को शुभकामना कार्ड घर ले जाकर प्रियजनों को दिखाने को कहें।
सामग्री	हर छात्र के लिए एक पेपर और लेखन एवं चित्रकारी के लिए सामग्री
5. अपने लिए सकारात्मक संदेश	
समय	यह एक व्यक्तिगत कार्य होगा। इस कार्य को करने के लिए कुल 10 मिनट होंगे और हर बच्चे को अपने संदेश को कक्षा के साथ साझा करने के लिए 1–2 मिनट का समय दिया जाएगा।
प्रक्रिया	• बच्चे अपने लिए एक कार्ड बनाएँगे और संदेश लिखेंगे। • शुभकामना कार्ड के कवर पर बच्चा अपनी पसंदीदा लोगों/चीजों का चित्र बनाएँगे और अंदर उन्हें अपने बारे में जो अच्छा लगता है– उनकी कोई आदत/व्यवहार, उनका दूसरों के प्रति सोच या कोई घटना जो उन्हें याद हो लिखेंगे। • इस कार्य के लिए शिक्षक 10 मिनट दें और बच्चों को स्वेच्छा से अपने संदेश और लिखी हुई बात को कक्षा के सम्मुख साझा करने को कहें। शिक्षक बच्चों को प्रोत्साहित करें एवं किसी तरह का दबाव ना डालें।

	• गतिविधि समाप्त होने के बाद बच्चों द्वारा बनाए गए कार्ड को कक्षा के 'बच्चों के कार्य' के कोने में लगा दें।
सामग्री	हर बच्चे के लिए एक पेपर और लेखन एवं चित्रकारी के लिए सामग्री
6. कक्षा का मानचित्र	
समय	10 मिनट में समूह में कार्य होगा और प्रस्तुति के लिए हर समूह को 1–2 मिनट दिया जाएगा।
प्रक्रिया	• शिक्षक बच्चों को 5 छोटे समूह में बाँटें और हर समूह को बैठने के लिए एक निर्धारित जगह दें। • हर समूह को अपनी जगह से कक्षा का मानचित्र बनाना होगा। साथ ही साथ शब्दों में उस मानचित्र के सभी समानों/जगहों के नाम लिखने को कहें। • उदाहरण– शिक्षक बोर्ड पर विद्यालय का मानचित्र बनाकर एक उदाहरण देकर समझाएँ। • समूह में कार्य करने के बाद शिक्षक बारी–बारी से हर समूह को कक्षा में प्रस्तुति के लिए आमंत्रित करें। गतिविधि समाप्त होने के बाद समूह कार्य के पेपर को कक्षा के 'बच्चों के कार्य' के कोने में लगा दें।
सामग्री	हर समूह के लिए एक पेपर और लेखन सामग्री
7. घर से स्कूल तक का सफर	
समय	यह एक व्यक्तिगत कार्य होगा। इस कार्य को करने के लिए सबको 5–7 मिनट मिलेंगें और प्रस्तुति के लिए हर बच्चे को 1–2 मिनट का समय दिया जाएगा।
प्रक्रिया	• शिक्षक बच्चों को एक दिन पहले घर से स्कूल आने तक के रास्ते को देखने को कहें। रास्ते में महत्वपूर्ण जगहों (जैसे– मंदिर, तालाब, दुकान आदि) और दिशा को ध्यान में रखने को कहें और उनकी मानचित्र पर समझ के लिए पहले ही दिन उदाहरण देकर बताएँ। गतिविधि वाले दिन भी उदाहरण दें। • शिक्षक बच्चों को उनके घर से लेकर स्कूल तक का मानचित्र एक पेपर में बनाने को कहें। • शिक्षक हर बच्चे को बारी–बारी से कक्षा में प्रस्तुति के लिए आमंत्रित करें। • गतिविधि समाप्त होने के बाद समूह कार्य के पेपर को कक्षा के 'बच्चों के कार्य' के कोने में लगा दें।
सामग्री	हर बच्चे के लिए एक पेपर और लेखन सामग्री
8. पहेली बनाओ	
समय	10–15 मिनट में समूह में कार्य होगा और प्रस्तुति के लिए हर समूह को 5–7 मिनट का समय दिया जाएगा।

प्रक्रिया	• शिक्षक सबसे पहले 3–4 सरल एवं परिवेशीय उदाहरण देकर बच्चों को समझाएँ कि पहेली कैसी होती है। • फिर बच्चों को 5 छोटे समूहों में बाँटें। हर समूह को एक–एक शब्द वाले 4 पर्चे दें और उनमें से किसी दो पर बच्चों को पहेली बनाने को कहें। पहेली के लिए शब्द सरल एवं उनके परिवेश से होने चाहिए। • प्रस्तुति में हर समूह दूसरे समूहों से अपनी 2 पहेलियों को पूछेंगे और सही जवाब नहीं आने पर उनके उत्तर दूसरों के साथ साझा करेंगे। • गतिविधि समाप्त होने के बाद समूह कार्य के पेपर को कक्षा के 'बच्चों के कार्य' के कोने में लगा दें।
सामग्री	हर समूह के लिए एक पेपर और लेखन सामग्री
9. परिवेशीय जानवरों एवं पक्षियों के नाम की सूची बनाओ।	
समय	7–10 मिनट में समूह में कार्य होगा और प्रस्तुति के लिए 2 मिनट का समय दें।
प्रक्रिया	• बच्चों को 5 छोटे समूहों में बाँटें। हर समूह को अपने परिवेश से जानवरों एवं पक्षियों के नाम की सूची 2 अलग–अलग खानों में लिखने को कहें। इस सूची में बच्चे जितने चाहें उतने जानवरों और पक्षिओं के नाम लिख सकते हैं। • इस कार्य को करने के लिए 7–10 मिनट मिलेंगें और फिर प्रस्तुति के लिए हर समूह को जानवरों के नाम के साथ–साथ उनकी आवाज़ निकालने को कहें। • गतिविधि के बाद समूह कार्य के पेपर को कक्षा के 'बच्चों के कार्य' के कोने में लगा दें।
सामग्री	हर समूह के लिए एक पेपर और लेखन सामग्री
10. सब्ज़ियों एवं फलों के नाम की सूची बनाओ।	
समय	7–10 मिनट में समूह में कार्य होगा और गैलरी वॉक (दीवारों पर लगाए गए चित्रों/कार्यों को घूम–घूम कर देखना) के लिए 7–10 मिनट दें।
प्रक्रिया	• बच्चों को 5 छोटे समूहों में बाँटें। हर समूह को सब्ज़ियों एवं फलों के नाम की सूची 2 अलग–अलग खानों में लिखने को कहें। सूची में बच्चे जितने चाहें उतने सब्ज़ियों और फलों के नाम लिख सकते हैं। • इस कार्य को करने के लिए 7–10 मिनट मिलेंगें और प्रस्तुति के लिए हर समूह की सूची को कक्षा के विभिन्न कोनों/जगहों में लगाया जाएगा। बच्चे गैलरी वॉक करते हुए सारे समूहों के कार्यों को देखेंगे। गैलरी वॉक के लिए 7–10 मिनट दें। • गतिविधि समाप्त के बाद समूह कार्य के सभी पेपर कार्यों को कक्षा के 'बच्चों के कार्य' के कोने में लगा दें।
सामग्री	हर समूह के लिए एक पेपर और लेखन सामग्री

11. रसोईघर की सैर	
समय	समूह में कार्य 7–10 मिनट और गैलरी वॉक के लिए 7–10 मिनट दें।
प्रक्रिया	• बच्चों को 5 छोटे समूहों में बाँटें। • बच्चों को रसोईघर की सामग्री– खाना बनाने के लिए उपयोग में आने वाले बर्तनों, सब्ज़ियों, फलों एवं मसालों का चित्र बनाकर उनके नाम लिखने को कहें। हर समूह को कम से कम 7–10 सामग्रियों के नाम लिखने होंगे। • इस कार्य को करने के लिए 7–10 मिनट मिलेंगें और प्रस्तुति के लिए हर समूह की सूची को कक्षा के विभिन्न कोनों/जगहों में लगाया जाएगा। बच्चे गैलरी वॉक करते हुए सारे समूहों के कार्यों को देखेंगे। गैलरी वॉक के लिए 7–10 मिनट दें। • गतिविधि समाप्त होने के बाद समूह कार्य के पेपर को कक्षा के 'बच्चों के कार्य' के कोने में लगा दें।
सामग्री	हर समूह के लिए एक पेपर और लेखन सामग्री
12. चलो, आओ, कुछ पकाएँ	
समय	समूह में कार्य 10–15 मिनट और गैलरी वॉक के लिए 7–10 मिनट दें।
प्रक्रिया	• बच्चों को 5 छोटे समूहों में बाँटें। • हर समूह को अपनी पसंद का कोई एक पकवान बनाने की विधि लिखनी होगी। बच्चों को विधि के साथ चित्र बनाने को कहें। बच्चों को ये भी बताएँ कि वे पकवान बनाने की विधि क्रम से लिखें। • इस कार्य को करने के लिए 7–10 मिनट मिलेंगें। प्रस्तुति के लिए हर समूह को 2–3 मिनट दिया जाएगा। प्रस्तुति के दौरान समूह अपनी पसंद के पकवान बनाने की विधि को दूसरों से साथ साझा करेंगे। • गतिविधि समाप्त होने के बाद समूह कार्य के पेपर को कक्षा के 'बच्चों के कार्य' के कोने में लगा दें।
सामग्री	हर समूह के लिए एक पेपर और लेखन एवं चित्रकारी के लिए सामग्री
13. आओ, कुछ नया बनाएँ	
समय	समूह में कार्य 10–15 मिनट और गैलरी वॉक के लिए 7–10 मिनट दें।
प्रक्रिया	• आप बोर्ड पर इन सामानों के नाम लिखें: चीनी, दूध, आटा, आलू, तेल, नमक, चावल, मसाला, प्याज। • प्रत्येक समूह को इन सामानों से खाने की चीजें बनाने को कहें। समूह जो भी बनाना चाहता है, उसकी विधि लिखकर दिखाएँ। हर समूह कोशिश करे कि वह ज्यादा से ज्यादा चीजें बनाने की विधि लिखे। • लेखन के बाद सभी समूह अपने कार्य को प्रस्तुत करें।

	• गतिविधि समाप्त होने के बाद समूह कार्य के पेपर को कक्षा के 'बच्चों के कार्य' के कोने में लगा दें।
सामग्री	हर समूह के लिए पेपर
14. कहानी सुनो और क्रमबद्ध करो	
समय	कहानी सुनाने का समय– 5–10 मिनट, समूह में कार्य 5–7 मिनट, एक दूसरे समूह द्वारा क्रमबद्धता की जाँच– 2–3 मिनट, शिक्षक द्वारा क्रमबद्धता को साझा करना– 1–2 मिनट
प्रक्रिया	• कक्षा में छोटी–सी कहानी सुनाएँ। कहानी को 5–6 हिस्सों में बाँटें और हर हिस्से की अलग–अलग पर्ची बनाएँ। आपके पास 1 सेट में सारे हिस्से की पर्चियाँ होनी चाहिए। इस प्रकार आपके पास 5 सेट होने चाहिए। • बच्चों को 5 छोटे समूहों में बाँटें और हर समूह को सारे घटनाक्रमों का एक सेट दें। • हर समूह सुनी हुई कहानी की घटनाओं को क्रम से सजाएँ। समूह में कार्य करने के लिए उन्हें 5–7 मिनट का समय दें। • अंत में, सभी समूह अपनी–अपनी कहानी को पढ़कर सुनाएँ।
सामग्री	पर्चियों के लिए पेपर
15. कहानी पढ़ो, क्रम से सजाओ	
समय	कहानी पढ़ने के लिए 7–10 मिनट और क्रम से घटनाओ को सजाने के लिए 5 मिनट।
प्रक्रिया	• बच्चों को 5 छोटे समूहों में बाँटें। • हर समूह को पाँच पर्चियाँ दें। • अलग–अलग समूह के पर्चियों को अलग–अलग रखें। अब प्रत्येक समूह के पर्चियों को इस तरह मिला दें कि पर्चियाँ कहानी के क्रम में ना हों। फिर एक–एक समूह को बुलाकर उन्हें एक दूसरे की पर्चियाँ दे दें। • सभी समूह अब इन पर्चियों को क्रम से लगाएँ और कहानी बनाकर बताएँ।
सामग्री	हर समूह के लिए कहानी, क्रम रहित एवं क्रमबद्ध वाली पर्ची

16. शब्द अंताक्षरी	
समय	10–12 मिनट में समूह में शब्द अंताक्षरी और 3–4 मिनट चर्चा के लिए
प्रक्रिया	• बच्चों को 5 छोटे समूहों में बाँटें। • हर समूह को 2–3 पर्चियाँ दें जिनमें हिन्दी के एक–एक सरल शब्द लिखे हुए हों। • सबसे पहले हर समूह में से कोई एक बच्चा अपनी मर्जी से इनमें से एक पर्ची को उठाकर शब्द को पढ़ेगा। उसके दाई तरफ वाले बच्चे को उस शब्द की आख़िरी वर्ण की ध्वनि से नया शब्द बनाना है। • कोई भी शब्द दुबारा उपयोग में नहीं लाया जा सकता। इस तरह, बारी–बारी से यह प्रक्रिया समूह में चलेगी। अगर बच्चा शब्द नहीं बताता तो उसके बाद वाले बच्चे को बताना होगा। • यह प्रक्रिया 10 मिनट तक चलती रहेगी। अंत में, शिक्षक सभी समूह से पूछें कि किस समूह ने कितने शब्द बनाये। किस तरह के वर्णों/अक्षरों से शब्द बनाने में दिक्कत हुई, उन पर भी चर्चा करें।
सामग्री	पर्चियों के लिए पेपर
17. अनोखी बातचीत	
समय	बातचीत के लिए 2–3 मिनट और उस बातचीत को लिखने के लिए 5–7 मिनट (व्यक्तिगत लेखन) दें। प्रस्तुति के लिए हर जोड़े को 2–3 मिनट दें।
प्रक्रिया	• बच्चों को जोड़ों में बाँटे और हर जोड़े को 2 वस्तुओं (जानवर, पक्षी, पेड़–पौधे, बादल, चिड़िया आदि) का नाम लिखकर दें। • हर जोड़ी को अपने आप को उन वस्तुओं की जगह खुद को रखकर बातचीत करनी होगी। बच्चों को बातचीत को रोचक बनाने के 2–3 उदाहरण दें। जैसे, पक्षी– मैं आज उड़कर थक गया हूँ। सोचता हूँ, इस घर के छत पर आराम कर लूँ... • इस बातचीत को अपने–अपने पन्ने में 5–7 मिनट के अंदर लिखने को कहें। • अब बच्चों को कक्षा के सामने अपने लिखे हुए को पढ़ने के लिए 2–3 मिनट दें। • गतिविधि समाप्त होने के बाद हर जोड़े की कहानी को कक्षा के 'बच्चों के कार्य' के कोने में लगा दें।
सामग्री	हर बच्चे के लिए पेपर एवं लेखन सामग्री

18. सुनो और पता लगाओ।	
समय	समूह कार्य के लिए 15–20 मिनट
प्रक्रिया	• बच्चों को 5 छोटे समूहों में बाँटें। हर समूह के बीच 10–12 पर्चियाँ हो। हर एक पर्ची में कोई शब्द और उनकी विशेषता, जैसे उपयोगिता, रंग, रूप आदि के बारे में 3 बातें लिखकर रख दें। • समूह के सारे बच्चे बारी–बारी से 2–2 पर्चियाँ उठाएँ और बिना देखे अपने पास रख लें। • कोई भी बच्चा अपने समूह में खेल की शुरुआत कर सकता है। वह अपने पर्ची को बिना देखे अपने दाई तरफ के बच्चे को देगा। यह बच्चा उस पर्ची में लिखे शब्द को मन में पढ़ेगा। सिर्फ शब्द की विशेषताएँ अपने मित्र को बताएगा। उसके मित्र को वह शब्द पहचानना है। • शब्द नहीं पहचान पाने पर दूसरे बच्चे द्वारा उत्तर बताया जाएगा। इसी तरह यह खेल आगे बढ़ेगा। इस खेल के दो राउंड होंगे और हर प्रतिभागी को 2 मौके मिलेंगे।
सामग्री	शब्द और उसके विशेषताओं वाली 10 पर्चियाँ
19. चलो, नया बुक कवर बनाएँ!	
समय	व्यक्तिगत कार्य के लिए 10–15 मिनट दें। हर बच्चे को साझा करने का समय 2–3 मिनट दिया जाएगा।
प्रक्रिया	• शिक्षक बच्चों को पूर्व में सुनाई गई किसी भी कहानी को फिर से सुनाएँ और उनमें आए हुए चित्रों को भी दिखाएँ। बैठक व्यवस्था कुछ इस प्रकार से हो कि कक्षा का हर बच्चा हर एक चित्र को देख सकें। • कहानी सुनाने के बाद बच्चों को कागज़ दें और उन्हें अपने मन से एक नया बुक कवर बनाने को कहें, जिसमें वह उनका पसंदीदा पात्र, कोई घटना, जो उन्होंने कहानी में से समझा हो आदि बना सकते हैं। • बच्चे बुक कवर बनाने के बाद उसके बारे में 2–3 वाक्य लिखें और दूसरों के सामने प्रस्तुत करें। • बच्चे इन सब बिन्दुओं पर बात कर सकते हैं– उन्होंने क्या बनाया है और क्यूँ? कहानी में सबसे अच्छा उन्हें क्या लगा? कहानी में से उनका पसंदीदा पात्र कौन है और क्यूँ?
सामग्री	हर बच्चे के लिए कागज़ और लेखन एवं चित्रकारी के लिए सामग्री

पठन–अभ्यास (सहज–3) की गतिविधियाँ

प्रथम कालांश में सप्ताह के आख़िरी तीन दिन पठन–अभ्यास से जुड़ी गतिविधियाँ होंगी:

पढ़कर सुनाना और चर्चा (पहला दिन) | **मार्गदर्शन में बच्चों द्वारा पठन (दूसरा दिन)** | **बच्चों द्वारा स्वतंत्र पठन (तीसरा दिन)**

प्रत्येक बच्चे के लिए सहज–3 उपलब्ध करवाई गयी है। सहज–3 में बच्चों के पठन–अभ्यास के लिए कई रोचक पाठ दिए गए हैं। इन पाठों को बच्चों के पठन स्तर को ध्यान में रखकर बनाया गया है। सहज–3 में तीन स्तर के पाठ रखे गए हैं। साप्ताहिक योजना के अनुसार इन पाठों पर कार्य करें। प्रत्येक पाठ पर तीन दिन कार्य किया जाएगा।

पढ़कर सुनाना और चर्चा (पहला दिन): इस गतिविधि से बच्चों में लिखित पाठ को सुनकर समझने और पढ़ने के आदर्श तरीके को देखने–समझने का मौका मिलता है।

पढ़कर सुनाने का कार्य करने के लिए इन चरणों को पूरा करें:

प्रेरणा सूची की दक्षताएँ: H301-H306

5–7 मिनट	सभी बच्चों को पाठ संख्या बताएँ और किताब खोलकर एकबार पाठ दिखाएँ। बच्चों को पाठ में दिए गए चित्र देखकर अनुमान लगाने को कहें। 3–4 बच्चों के अनुमान पूछें।
5–10 मिनट	पाठ को आदर्श तरीके से पाठ पढ़कर सुनाएँ (आदर्श वाचन)। पाठ को उचित प्रवाह और उतार–चदाव के साथ पढ़ें। बीच में कोई चर्चा ना करें। बच्चों को पठन के दौरान अपनी–अपनी किताबों में पाठ देखने को कहें।
5–10 मिनट	पाठ को दुबारा पढ़ें और ध्यान दें कि सभी बच्चे पाठ को सुन रहे हैं और अपनी–अपनी किताबों में पाठ को देख रहे हैं।
7–8 मिनट	पाठ पर बच्चों के अनुमान पर चर्चा करें और फिर सरल प्रश्नों की मदद से चर्चा प्रारंभ करें।
7–8 मिनट	अब अनुभव, कल्पना, अनुमान, तर्क, इत्यादि वाले प्रश्नों की मदद से चर्चा आगे बढ़ाएँ।

मार्गदर्शन में बच्चों द्वारा पठन (दूसरा दिन): इस गतिविधि के दौरान बच्चों को शिक्षक और सहपाठियों की मदद से किसी पाठ को पढ़ने का मौका मिलता है। इस गतिविधि में कक्षा को 3–4 बच्चों के समूहों में बाँटा जाता है। शिक्षक प्रत्येक समूह में जाकर कुछ समय बच्चों के पढ़ने के कार्य को देखते–समझते हैं और उन्हें पढ़ने में मदद करते है:

'मार्गदर्शन में बच्चों द्वारा पठन' पर कार्य करने के लिए इन चरणों को पूरा करें:

प्रेरणा सूची की दक्षताएँ: H301-H312

5–7 मिनट	एक बार फिर पाठ का आदर्श वाचन करें। बच्चों को पढ़ने से पहले अपनी–अपनी किताबों में देखने को कहें।
3–5 मिनट	बच्चों को 3–4 के समूहों में बाँटे। समूह में सभी बच्चों को एक दूसरे को पढ़कर सुनाने को कहें। स्थान की उपयुक्तता को देखते हुए ज़रूरत पड़ने पर जोड़ों में भी यह कार्य करवा सकते हैं।
20–25 मिनट	शिक्षक अलग–अलग समूह में जाएँ और बच्चों को पढ़ते हुए सुनें। फिर आवश्यकतानुसार मदद करें। उस समूह में पहले जाएँ जहाँ बच्चों को पढ़ने में कठिनाई आ रही है। समूह की पहचान पहले से करके रख लें।
5–7 मिनट	किसी खास शब्द/वाक्य को पढ़ने में अगर ज्यादातर बच्चों को दिक्कत हुई हो तो उन्हें बोर्ड पर लिखें और पढ़कर दिखाएँ।

बच्चों द्वारा स्वतंत्र पठन (तीसरा दिन): इस गतिविधि से बच्चों को स्वतंत्र रूप से पढ़ने के मौके मिलते हैं। इस दौरान शिक्षक कुछ बच्चों के पढ़ने के स्तर का आकलन भी करते हैं:

'बच्चों द्वारा स्वतंत्र पठन' पर कार्य करने के लिए इन चरणों को पूरा करें:

प्रेरणा सूची की दक्षताएँ: H306-H312

10–15 मिनट	बच्चों को पाठ को पढने को कहें। जो बच्चे अभी भी नहीं पढ़ पा रहे हैं, उनके पास जाकर उनकी मदद करें। बच्चे जोड़े में भी बैठकर पढ़ सकते हैं।
7–10 मिनट	3–4 बच्चों को सामने पढ़ने के लिए आमंत्रित करें और बाकी बच्चे उन्हें देखें।
15–20 मिनट	शिक्षक बारी–बारी से 10 बच्चों को बुलाएँ (एक साथ सभी बच्चे ना आएँ) और उन्हें जिस पाठ का स्वतंत्र पठन किया जा रहा है, उससे 'अगला पाठ' पढ़ने को कहें। जब बच्चा पढ़े तो उसके पठन स्तर का आकलन करें। इस दौरान बाकी बच्चे स्वतंत्र पठन का कार्य जारी रखें। आगे आकलन के तरीके का विवरण दिया गया है।

पठन स्तर के आकलन के लिये दिशा–निर्देशः

आकलन कब करें: प्रत्येक स्वतंत्र पठन के दौरान कम से कम 10 बच्चों के पठन स्तर का आकलन करें। प्रत्येक 15 दिन में हर बच्चे का आकलन हो, यह सुनिश्चित करें। अगर बच्चे की संख्या 20 से ज्यादा है, तो कुछ बच्चों का आकलन दूसरे दिन भी कर सकते हैं।

आकलन के लिए पाठ का चयनः जिस पाठ को पढ़ाया जा रहा है, उसके अगले पाठ को इस आकलन के लिए इस्तेमाल करें।

आकलन का तरीका और पठन स्तर की पहचानः आप बच्चों को उसकी किताब से पाठ पढ़ने के लिए दें और आप अपनी पुस्तक में शब्द–दर–शब्द उसे देखें। निम्न के अनुसार बच्चों के पठन स्तर को चिह्नित करें:

पढ़ने की प्रक्रिया	स्तर
कुछ नहीं पढ़ पा रहा है या प्रथम वाक्य में ही अटक गया, या एक दो शब्द को छोड़कर सभी शब्द गलत पढ़ रहा है।	स्तर 1
प्रत्येक वाक्य के लगभग आधे शब्द को सही पढ़ पा रहा है, कुछ–कुछ मुश्किलों के बाद।	स्तर 2
पाठ के ज्यादातर शब्दों को सही पढ़ पा रहा है, मगर वाक्य की तरह नहीं पढ़ पा रहा है।	स्तर 3
पाठ को वाक्य–दर–वाक्य सही से पढ़ पा रहा है और पढ़ने के सामान्य तरीके को प्रदर्शित कर पा रहा है।	स्तर 4

बच्चों के पठन स्तर का रिकॉर्ड: इसके लिए अगले पृष्ठ पर एक तालिका दी गयी है– इसमें प्रत्येक बच्चे के पठन स्तर को नोट करना है। हर सप्ताह इस तालिका को भरें। अगर बच्चे की संख्या ज्यादा हो तो आप ऐसी ही तालिका अपने रजिस्टर में बना लें।

आकलन के बाद कार्य योजनाः स्तर के अनुसार बच्चों की मदद की योजना बनाएँ। 'मार्गदर्शन में पठन' के दौरान आकलन के आधार पर उन बच्चों को ज्यादा सहयोग दें जो स्तर 2–3 में हैं। स्तर 1 के बच्चों के लिए उपचारात्मक कार्य की योजना बनाएँ और उस पर कार्य करें।

बच्चों के पठन स्तर के आकलन के लिए

क्रं	बच्चे का नाम	नीचे के सप्ताह संख्या के अनुसार बच्चों के नाम के सामने उनके स्तर को लिखें														
		1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
1																
2																
3																
4																
5																
6																
7																
8																
9																
10																
11																
12																
13																
14																
15																
16																
17																
18																
19																
20																

पाठ / दक्षताएँ	H301	H302	H303	H304	H305	H306	H307	H308	H309	H310	H311	H312	H313	H314
प्रार्थना	✓	✓											✓	
मुर्गा और लोमड़ी	✓	✓	✓	✓		✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓
बादल किसके काका ?	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	
तालाब में चाँद	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	
साहसी सीमा	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	
सबसे पहले	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	
इसमें क्या शक है ?	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	
अगर पेड़ भी चलते होते	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	
वाराणसी की यात्रा	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	
बंदर बाँट	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	
पहेलियाँ	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	
चाँद का कुर्ता	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	
सीख	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	
माथा पच्ची	✓	✓	✓							✓			✓	
जड़ और फूल	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	
घुमक्कड़ तारक	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	
लोक गीत	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	
पत्र	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
सुभाष चन्द्र बोस	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
भारत है मेरा घर	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	
घमंडी का बाग	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	

10. प्रथम कालांश में सहायक सामग्री पर कार्य: सप्ताह 11–16

सप्ताह संख्या 11 से 16 तक प्रथम कालांश में पठन–अभ्यास की गतिविधियाँ आयोजित की जाएँगी। इस दौरान मौखिक भाषा विकास की गतिविधियों पर कार्य नहीं होगा। अब इस कालांश में सिर्फ़ सहज–3 पर कार्य होगा। प्रत्येक सप्ताह सहज–3 के दो पाठों पर कार्य होगा।

कार्य	गतिविधि (40 मिनट)	सामग्री	समय
पठन–अभ्यास (सहज–3) – पाठ 1	पढ़कर सुनाना और चर्चा	सहज–3	सप्ताह का पहला दिन
	मार्गदर्शन में बच्चों द्वारा पठन	सहज–3	सप्ताह का दूसरा दिन
	बच्चों द्वारा स्वतंत्र पठन	सहज–3	सप्ताह का तीसरा दिन
पठन–अभ्यास (सहज–3) – पाठ 2	पढ़कर सुनाना और चर्चा	सहज–3	सप्ताह का चौथा दिन
	मार्गदर्शन में बच्चों द्वारा पठन	सहज–3	सप्ताह का पाँचवाँ दिन
	बच्चों द्वारा स्वतंत्र पठन	सहज–3	सप्ताह का छठा दिन

सप्ताह 11–16 में पठन–अभ्यास की गतिविधियाँ

- पठन–अभ्यास की गतिविधियाँ, इनके तरीके और आकलन, सभी पूर्व की तरह ही रहेंगे। एक पाठ पर तीन दिन कार्य करें।
- सप्ताह 15 में पाठ के साथ 'पहेलियाँ' भी हैं। पहेलियों के लिए पठन–अभ्यास के तरीके उपयोग में ना लें, बल्कि उसे रोचक तरीके से कक्षा में आयोजित करें और नई पहेलियाँ भी शामिल करें।
- सप्ताह 16 में कहानी बनाने जैसी गतिविधियाँ हैं, इसलिए इसमें कोई पठन कार्य नहीं है। इन्हें रोचक तरीके से कक्षा में आयोजित करें। इस सप्ताह के प्रत्येक दिन बच्चों के समूह बनाकर कहानियाँ बनवाएँ और उन्हें प्रस्तुत करवाएँ।

11. द्वितीय कालांश (कलरव–3) पर कार्य करने की रणनीति

पाठ्यपुस्तक (कलरव–3) पर आधारित शिक्षण

सत्र 2020–21 में, कक्षा–3 में भाषा शिक्षण हेतु कुल 16 सप्ताह का शिक्षण कार्य किया जाना प्रस्तावित है। इन 16 सप्ताहों में भाषा शिक्षण के लिए द्वितीय कालांश में शिक्षक कक्षा 3 की पाठ्यपुस्तक कलरव–3 पर आधारित शिक्षण कार्य करेंगे। कलरव–3 में कुल 21 अध्याय दिए गए हैं, जिनमें छह तरह की विधाओं को सम्मिलित किया गया है। इन विधाओं में 6 कविताएँ, 11 कहानियाँ, 1 पत्र, 1 शब्द पहेली, 1 चित्रकथा तथा 1 संवाद पर आधारित अध्याय सम्मिलित किए गए हैं। इसके साथ ही, पाठ्यपुस्तक में 4 अतिरिक्त पठन–अभ्यास (अपने आप) तथा 4 आकलन अभ्यास (कितना सीखा) को भी सम्मिलित किया गया है। पाठ्यपुस्तक के प्रत्येक पाठ पर शिक्षक, पाठ की विधा के आधार पर 2 से 4 दिन कार्य करेंगे। साप्ताहिक रूपरेखा के लिए शिक्षक सप्ताहवार वार्षिक शिक्षण योजना को देख सकते हैं।

'मिशन प्रेरणा' के अंतर्गत कक्षा–3 की प्रेरणा सूची में मुख्यतः निम्नलिखित शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने की योजना है:

- सुनकर समझना और प्रतिक्रिया देना
- मौखिक शब्दावली का विकास और मौखिक अभिव्यक्ति व वर्णन
- शब्द–पहचान व मौखिक पठन का प्रवाह
- पढ़कर समझना
- लेखन

इन सभी प्रकार के अधिगमों को प्राप्त करने में पाठ्यपुस्तक एक महत्वपूर्ण माध्यम है, इन पर नियोजित तरीके से शिक्षण कार्य करने की आवश्यकता है। इसमें नियमित रूप से साप्ताहिक योजना के अनुसार कार्य किया जाएगा, प्रत्येक पाठ पर मौखिक कार्य, पठन और लेखन से जुड़े कई प्रकार के अभ्यास होंगे। इसके साथ–साथ पाठ्यपुस्तक के अलावे बच्चों के स्तर के अनुसार कहानी की किताबें भी कक्षा में रखनी चाहिए।

पाठ–आधारित शिक्षण की रणनीतियाँ

कलरव–3 पर शिक्षण कार्य करने के लिए कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं, जो यह समझाने में सहायक होंगे कि अलग–अलग विधा वाले पाठ पर किस प्रकार कार्य किया जा सकता है। नीचे दिए जा रहे विवरण एवं कार्य करने की रणनीति एक उदाहरण के तौर पर हैं। शिक्षक कक्षा की ज़रूरतों के अनुसार अपने विवेक से बदलाव करें।

कलरव–3 के पाठों को ध्यान में रखकर मुख्यतः चार प्रकार की शिक्षण–रणनीतियाँ तय कर सकते हैं –

गद्य (कहानी/ चित्रकथा/पत्र संवाद)	पद्य (कविता)	आकलन (कितना सीखा)	स्वतंत्र पठन (अपने आप)

गद्य (कहानी, चित्रकथा, पत्र, संवाद) पर कार्य

गद्य से संबंधित पाठ पर शिक्षण में आदर्श वाचन, कठिन शब्दों पर कार्य, पाठ पर आधारित चर्चा (शीर्षक पर चर्चा, कहानी का अनुमान लगाना – पाठ पढ़ने से पहले व मध्य में), मौखिक सवाल–जवाब, मार्गदर्शनयुक्त पठन, सरल अभ्यास–कार्य, स्वतंत्र पठन, उच्चस्तरीय अभ्यास एवं मूल अवधारणा पर बातचीत पर आधारित कार्य किए जाएँगे। पत्र, संवाद या चित्रकथा पर बेहतर कार्य करने के लिए शिक्षकों को उदाहरण देकर बच्चों को समझाना चाहिए। अभ्यास के रूप में बच्चों से कुछ पत्र या चित्रकथा का निर्माण भी कराया जा सकेगा। गद्य से संबंधित पाठ पर निम्नलिखित प्रकार से कार्य किया जा सकता है–

पहला दिन	• बच्चे 5 से 7 मिनट, पाठ को चित्रों की मदद से पाठ को समझने की कोशिश करेंगे। • शिक्षक बच्चों से थोड़ी बातचीत करेंगे कि उन्होंने पाठ के बारे में क्या–क्या समझा है? पाठ में क्या–क्या हुआ होगा? • आगे शिक्षक पाठ को आदर्श वाचन रूप में पढ़कर सुनाएँगे। पढ़ने के दौरान कठिन और नए शब्दों के अर्थ पर बातचीत करें। • पाठ पढ़ लेने के बाद सामान्य प्रश्नों की मदद से चर्चा/बातचीत करें। • अंत में बच्चे कठिन शब्दों को अपनी कॉपी में लिखेंगे और पढ़ेंगे। शिक्षक इन शब्दों का अर्थ फिर से बच्चों को बताएँ।
दूसरा दिन	• बच्चों को 4–5 के समूह में बिठाएँ और उन्हें पाठ को एक दूसरे को पढ़कर सुनाने को कहें। • शिक्षक एक–एक करके, समूह में जाकर देखेंगे कि किन बच्चों को पढ़ने में मार्गदर्शन की ज़रूरत है। जिन बच्चों को पढ़ने और समझने में थोड़ी समस्या आ रही है, शिक्षक उन बच्चों को मदद करें। • अब पाठ के अभ्यास पर कार्य करवाएँ। अभ्यास–कार्य में शब्दों के अर्थ, कथानक से जुड़े सवाल, एक वाक्य तक के जवाब वाले प्रश्न और सामान्य व्याकरण से जुड़े सवाल करवाए जाएँ।

तीसरा दिन	• बच्चे स्वतंत्र रूप से पाठ को पढ़ने का कार्य करेंगे। • एक–दो बच्चों से ऊँची आवाज़ में पाठ पढ़वाएँ। • पाठ पढ़ने के बाद शिक्षक मौखिक सवाल करेंगे और यह सुनिश्चित करेंगे कि सभी बच्चे पाठ को ठीक से समझ गए हैं। • अब शिक्षक पाठ के अभ्यास पर कार्य करवाएँ।
चौथा दिन	• पाठ की कहानी को बच्चों से उनके शब्दों में सुनें। • पाठ से मिलती जुलती और इन्हीं पात्रों की कोई कहानी उन्हें याद हो तो उसे भी बच्चों से सुनें। • अंत में कल्पना करने, तुलना करने, विश्लेषण करने और अपना मत बनाने वाले अभ्यास के प्रश्नों पर कार्य करें। • बच्चों से पाठ की घटनाओं पर अभिनय करने को कहें।

इस राणनीति के तहत शिक्षण–कार्य का एक उदाहरण (कलरव–3, पाठ–2: 'मुर्गा और लोमड़ी को लिया गया है')

सप्ताह	1
माह	सितंबर
विधा	कहानी
पाठ	मुर्गा और लोमड़ी
पाठ पर कार्य करने की रणनीति	
पहला दिन	• बच्चों को पाठ 'मुर्गा और लोमड़ी' के चित्रों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, समझने को कहें। • शिक्षक बच्चों से (शीर्षक, कथानक और लेखक आदि के बारे में) बातचीत करें कि उन्होंने पाठ के बारे में क्या–क्या समझा हैं? पाठ में क्या होने वाला हैं? • अब शिक्षक पाठ– 'मुर्गा और लोमड़ी' को आदर्श वाचन के रूप में पढ़कर सुनाएँ। (पढ़ने के दौरान आए कठिन और नए शब्द, जैसे– चालाक, खूँखार, समझौता, शिकारी, क्षमा आदि के अर्थ भी बताते जाएँ) • पठन के बाद शिक्षक बच्चों से, पाठ से जुड़े कुछ प्रश्न पूछेंगे और चर्चा करेंगे। जैसे– बताओ मुर्गा क्यों पेड़ की डाल पर बैठा था? सबसे बड़ा समाचार क्या था? शिकारी कुत्तों के आने की बात सुनकर लोमड़ी क्यों घबरा गई? आदि। • अब शिक्षक बच्चों से कठिन शब्दों को कॉपी में लिखने और पढ़ने को कहें।

दूसरा दिन	• बच्चे उपसमूहों में 'मुर्गा और लोमड़ी' पाठ को स्वयं पढ़ेंगे, शिक्षक एक–एक करके समूह में जाकर देखें कि किन बच्चों को पढ़ने में मार्गदर्शन की ज़रूरत है और आवश्यकतानुसार उन बच्चों को पढ़ने में मार्गदर्शन करें। • बच्चों द्वारा लिखे गए कठिन शब्द व अर्थ को पढ़ने व समझने के लिए शिक्षक मौखिक सवाल पूछ सकते हैं, जैसे– समझौता क्या होता है? क्षमा करने का क्या अर्थ है? आदि • शिक्षक बच्चों से पाठ के सरल अभ्यास करने को कहें। जैसे– प्रश्न संख्या 1 और 2।
तीसरा दिन	• शिक्षक बच्चों को स्वतंत्र रूप से 'मुर्गा और लोमड़ी' पाठ को पढ़ने के लिए कहें। • कुछ समय पश्चात शिक्षक एक या दो बच्चों से पाठ को ऊँची आवाज़ में पढ़ने को कहें। अन्य बच्चों को भी अपनी–अपनी पुस्तक में उँगली रखते हुए पढ़ने को कहें। • शिक्षक मौखिक रूप से कुछ प्रश्न पूछेंगे, जैसे– लोमड़ी मुर्गे को नीचे उतरने के लिए क्यों कह रही होगी? मुर्गे ने क्यों कहा कि कुछ शिकारी कुत्ते तेजी से इस ओर आ रहे हैं? आदि (सभी बच्चे की समझ पर ध्यान दें)? • पाठ के खुले छोर वाले प्रश्नों के अभ्यास पर कार्य करवाएँ। जैसे– अभ्यास के प्रश्न 3, 4, और 5।
चौथा दिन	• शिक्षक बच्चों को पाठ 'मुर्गा और लोमड़ी' की कहानी को अपने शब्दों में सुनाने का अवसर दें। 2–3 बच्चों से ही पूछें, बाकी बच्चों की उस पर राय लें। • बच्चों से पाठ के मुख्य भाग पर अभिनय करवाएँ। • फिर पाठ के अभ्यास 7 और 8 पर कार्य करने को कहें। बच्चों से अखबार बनाने के लिए अलग से कुछ समय दे सकते हैं। • शिक्षक बच्चों को 'मुर्गा और लोमड़ी' पाठ के पात्रों या घटना से मिलती–जुलती कहानियों को पढ़ने के लिए पुस्तकालय की पुस्तकें दें।

यह रणनीति एक सुझाव के तौर पर है, शिक्षक अपनी कक्षा की ज़रूरतों के आधार पर इसमें बदलाव कर सकते हैं।

पद्य (कविताओं) पर कार्य

बच्चे गीत/कविताओं को पिछली कक्षाओं से ही काफ़ी सुनते और गाते रहे हैं, इसलिए यह विधा उनके लिए नई नहीं है। हालाँकि लेखन शैली के तौर पर इसके गठन और प्रस्तुतीकरण को समझने की शुरुआत करना बहुत ही आवश्यक है। कविताओं पर भी अधिकांश काम गद्य (कहानी) की तरह ही होंगे पर कविता रचना, कविता को आगे बढ़ाना और पंक्तियों एवं पूरी कविता के भाव को समझना आदि काम गद्य से अलग हैं। इसलिए विविध उदाहरणों और अभ्यासों के द्वारा इस पर विशेष कार्य किया जाएगा। ख़ासतौर से पद्य शैली में किसी बात को कैसे कहा जाता है, बच्चे इसको समझने की शुरुआत कर सकते हैं।

इस योजना के तहत, शिक्षण कार्य का एक उदाहरण (कलरव–3, पाठ 3 से 'बादल किसके काका' को लिया गया है।)

सप्ताह	2
माह	सितंबर
विधा	कविता
पाठ	बादल किसके काका
पाठ पर कार्य करने की रणनीति	
पहला दिन	• बच्चों को पाठ्यपुस्तक की पाठ संख्या 3 पर दी गई कविता 'बादल किसके काका' के चित्रों पर ध्यान केंद्रित करते हुए कविता स्वयं पढ़कर समझने को कहें। • शिक्षक बच्चों से (शीर्षक, भावार्थ और कवि आदि के बारे में) बातचीत करें कि उन्होंने कविता के बारे में क्या–क्या समझा है। • अब शिक्षक कविता – 'बादल किसके काका' को दो बार हाव–भाव के साथ पढ़कर सुनाएँ। (पढ़ने के दौरान आए कठिन और नए शब्द, जैसे– निराला, किरण, चमकीले और धारीदार आदि के अर्थ पर बात करें।) • पठन के बाद शिक्षक बच्चों से पाठ से जुड़े कुछ मौखिक प्रश्न पूछेंगे और चर्चा करेंगे। जैसे– किसने दरवाजा बंद कर लिया? पानी कहाँ से बरसने लगा? इत्यादि। • अब शिक्षक बच्चों से कठिन शब्दों को कॉपी में लिखने और पढ़ने को कहें।
दूसरा दिन	• बच्चे उपसमूहों में 'बादल किसके काका' कविता को स्वयं पढ़ेंगे। शिक्षक एक–एक करके, समूह में जाकर देखेंगे कि किन बच्चों को पढ़ने में मार्गदर्शन की ज़रूरत है और आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करेंगे। • शिक्षक बच्चों से, पाठ से जुड़ा सरल अभ्यास करवाएँ। जैसे– प्रश्न 2 और 3। इन प्रश्नों को आधार बनाकर चर्चा करें। • बच्चों द्वारा लिखे गए कठिन शब्द व अर्थ से जुड़े कुछ मौखिक सवाल पूछ सकते हैं, जैसे– बादल के गरजने पर क्या–क्या होता है? बादल के आवाज़ तुम्हें कैसा लगता है? आदि
तीसरा दिन	• शिक्षक बच्चों को एकबार स्वतंत्र रूप से 'बादल किसके काका' कविता पढ़ने के लिए कहें। • कुछ समय पश्चात शिक्षक एक या दो बच्चों से कविता– 'बादल किसके काका' ऊँची आवाज़ में हाव–भाव के साथ पढ़ने व अन्य बच्चों को साथ–साथ अपनी पुस्तक में उँगली रखते हुए पढ़ने को कहेंगे। • अब बच्चों से अभ्यास के प्रश्न 1 और 4 करवाएँ। बच्चों को सरल तरीके के निर्देश समझा कर बताएँ।

चौथा दिन	• शिक्षक बच्चों से कविता से जुड़े कुछ अन्य प्रश्न, जैसे– यह कविता कैसी है? 'बारिश या बादल' की कोई अन्य कविता याद है? इत्यादि पर बात करें। • बच्चों से 'बरसात या बादल' से जुड़ी किसी घटना पर अभिनय भी करवा सकते हैं। • बच्चों को बताएँ कि पर्यायवाची शब्द क्या है और उनके जीवन से जुड़े शब्दों के पर्यायवाची शब्द बताएँ। • बच्चों को पाठ के अभ्यास 5 में दिए गए कविता को पढ़ने को कहें और उसके मुख्य भाव पर चर्चा करें। शिक्षक चाहें तो इस कविता को बड़े चार्ट पर लिखवा कर दीवार पर चिपका सकते हैं।

आकलन (कितना सीखा?) पर कार्य

पाठ्यपुस्तक कलरव–3 के साथ 1–5 पाठ के पश्चात एक आकलन पत्रक– 'कितना सीखा?' दिया गया है। इस पत्रक में पूर्व के पाठ से जुड़े प्रश्न हैं। इस आकलन से शिक्षक को यह समझने में मदद मिलेगी कि अब तक पढ़े गए पाठों पर बच्चों की कैसी समझ बनी है और वे किन–किन दक्षताओं को प्राप्त कर पाए हैं या उन्हें पाने की ओर अग्रसर हैं। उन बच्चों की पहचान कर सकते हैं जो अभी भी कक्षा में इस आकलन के आधार पर पीछे हैं। यह अभ्यास बच्चों एवं शिक्षकों, दोनों के लिए महत्वपूर्ण कार्य हैं।

आकलन पत्रकों की कुल संख्या 4 है।

इस योजना के तहत शिक्षण कार्य का एक उदाहरण (कलरव–3 ,'कितना सीखा?–1) (पृष्ठ संख्या 23–24) से लिया गया है।

सप्ताह	4
माह	अक्टूबर
विधा	आकलन
पाठ	कितना सीखा? – 1 (पृष्ठः 23–24)
पाठ पर कार्य करने की रणनीति	
पहला दिन	• शिक्षक, 'कितना सीखा?' के प्रति सकारात्मक माहौल का निर्माण करें। सभी पाठों को एक बार याद दिला दें। फिर 'कितना सीखा?' के बारे में बताएँ कि यह अभ्यास इन्हीं पाठों के समझ के आधार पर बना है, जिस पर दो दिन– आज और कल कार्य करेंगे। • 'कितना सीखा?' के पहले प्रश्न– 'बोलकर सुनाओ' के लिए दो बच्चों के जोड़े बना दें और एक दूसरे को पढ़कर सुनाने को कहें। फिर शिक्षक बोर्ड पर सभी शब्दों को लिखकर बच्चों के पूछें। • अब, प्रश्न 2 से 6 तक बारी–बारी से बच्चों को समझाएँ और प्रत्येक का एक उदाहरण अवश्य दें। प्रश्न 3 के लिए बच्चों से पहले मौखिक स्तर पर वाक्य बनवा लें और फिर उन्हें लिखने को कहें।

	• शिक्षक प्रत्येक प्रश्न के लिए चर्चा कर लें ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि बच्चों ने प्रश्नों को समझ लिया है। • शिक्षक बच्चों के लेखन अभ्यास की जाँच करें और व्यक्तिगत तौर पर बच्चों को अपनी राय और सुझाव दें।
दूसरा दिन	• अब प्रश्न 7 पर सभी बच्चों के साथ एक साथ कार्य करें। कहानी को संक्षिप्त में सुनें ताकि ज्यादा से ज्यादा बच्चे कहानी सुना सकें। • प्रश्न 8 के उत्तर के लिए बच्चों को प्रश्न को सरल करके बताएँ और उनके उत्तर सुनें। • प्रश्न–9 के लिए बच्चों को निर्देश समझा दें और पढ़ने के बाद उनसे प्रश्न–उत्तर करें। यदि संभव हो तो कोशिश करें कि इस प्रश्न के उत्तर प्रत्येक बच्चे से व्यक्तिगत रूप से अलग–अलग सुनें। • शिक्षक बड़े समूह में इस कार्य पर सभी बच्चों के अनुभव सुनें। • व्यक्तिगत तौर पर प्रश्न संख्या 7, 8 और 9 को आधार बनाकर बच्चों को अपनी राय और सुझाव दें ताकि वे आगे सुधार के लिए कार्य कर सकें।

अगर यह आकलन कार्य 2 दिन में नहीं होता है, तो आप इसके लिए 1 दिन का समय बड़ा सकते हैं।

स्वतंत्र पठन (अपने आप) पर कार्य

पाठ्यपुस्तक कलरव–3 में बच्चों को स्वतंत्र रूप से पढ़ने के लिए– 'अपने आप' पाठ दिया गई है। इन पाठों का उद्देश्य बच्चों को स्वतंत्र पाठक बनाने की ओर ले जाना है। बच्चे स्वतंत्र पठन करने का अभ्यास करें इसके लिए कलरव–3 और सहज–3 के अलावा, स्वतंत्र पठन के लिए बच्चों को पुस्तकालय की किताबें पढ़ने के लिए दें। कहानी की पुस्तकों का चयन करते समय यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि कहानियाँ बच्चों के स्तर की, मनोरंजक व रोचक होनी चाहिए। साथ ही कहानी के पात्र, घटना या पटकथा बच्चों के लिए परिचित होने चाहिए।

इस रणनीति के तहत, शिक्षण कार्य का एक उदाहरण (कलरव–3, 'अपने आप–1') (पृष्ठ संख्या 31) से लिया गया है।

सप्ताह	5
माह	अक्टूबर
विधा	स्वतंत्र पठन
पाठ	अपने आप–1 (ख़रगोश और हाथी) पृष्ठ संख्या –31
पाठ पर कार्य करने की रणनीति	
पहला दिन	• शिक्षक कक्षा में 4–5 बच्चों के समूह बनाएँ और उन्हें कलरव–3 की पृष्ठ संख्या 31 खोलकर, समूह में चित्रों पर आधारित चर्चा करने को कहें। जैसे– चित्र देखकर क्या लगता है, कहानी में कौन–कौन होगा? कहानी में क्या हुआ होगा? आदि

	• अब सभी समूहों में से एक या दो बच्चों से प्रतिक्रिया लें कि उनके समूह में किन–किन बातों पर चर्चा की गई। • बच्चों को समूह में एक–एक करके कहानी पढ़ने को कहें। जब एक बच्चा पढ़ रहा हो तो समूह के अन्य बच्चे साथ–साथ अपनी पुस्तक में उँगली रखते हुए मन–ही–मन पढ़ने के साथ सुन रहे होंगे। • कहानी की समझ पर आधारित कुछ प्रश्न शिक्षक बोर्ड पर लिख सकते हैं। जिन पर बच्चे अपने समूह में ही चर्चा करेंगे। जैसे– पानी ना बरसने से क्या हुआ? खरगोशों ने तालाब के किनारे से जाने का विचार क्यों किया? लंबकर्ण ख़रगोश ने हाथियों के राजा से क्या कहा? आदि
दूसरा दिन	• बच्चों को कलरव–3 का पृष्ठ 31 खोलकर 'ख़रगोश और हाथी' कहानी को स्वतंत्र रूप से पढ़ने के लिए कहें। एक बार फिर बच्चों से समझ आधारित प्रश्न पूछें और उन पर संक्षिप्त चर्चा करें। • शिक्षक बच्चों को 'अपने आप–1' में दी गई कहानी से मिलती–जुलती कहानियों की किताबें, विद्यालय के पुस्तकालय से पढ़ने के लिए उपलब्ध कराएँ। ये कहानियाँ हाथी, जंगल, तालाब या ख़रगोश से संबंधित या बच्चों की रुचि के अनुसार हो सकती हैं। • शिक्षक बच्चों को नई कहानी की कुछ रोचक बातें या उनके पात्रों के विषय में बताकर पढ़ने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। • अगर कहानी की किताबें उपलब्ध नहीं है तो बच्चों को इस कहानी पर एक चित्र बनाने के लिए बोस सकते हैं।

12. आकलन एवं पुनरावृत्ति

'आकलन' शिक्षण प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। इससे शिक्षकों को अपने छात्रों की प्रगति पर नज़र रखने और अपनी शिक्षण प्रक्रिया को बच्चों के वर्तमान स्तर के अनुरूप समायोजित करने में मदद मिलती है। आकलन का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना है कि बच्चों को सीखने में क्या कठिनाइयाँ हो रही हैं जिसके आधार पर शिक्षण पद्धति के प्रभावी तरीकों को उपयोग में लाते हुए शिक्षण रणनीति बनाई जाती है। इसलिए इसे *'सीखने के लिए आकलन'* भी कहा जाता है। इसके पीछे यह सिद्धांत है कि आकलन और शिक्षण को समग्र रूप से एकीकृत किया जाना चाहिए।

'सीखने के लिए आकलन' के लिए नियमित रूप से आकलन (सतत आकलन) किया जाना आवश्यक है। इसके लिए आवश्यक शर्त यह है कि सभी बच्चों को सीखने के लिए न्यूनतम समय एवं अभ्यास के मौके ज़रूर मिलें।

इस सिद्धांत के अनुसार, आकलन के द्वारा बच्चों की उपलब्धियों का पता लगाया जाता है एवं उनका विश्लेषण करके शिक्षक यह तय करते हैं कि उनकी कक्षा के कितने बच्चे लक्षित स्तर पर हैं और कितने नहीं। इसके पश्चात्, आगे की शिक्षण रणनीति तय की जाती है। सबसे पहले शिक्षक यह तय करते हैं कि किन–किन बच्चों को सीखने में कहाँ–कहाँ दिक्कत आ रही है। इसके बाद शिक्षक इन बच्चों को अलग से समय देकर इनके साथ काम करते हैं। कई शिक्षक को इन बच्चों के साथ काम करने के लिए अपनी शिक्षण पद्धति में बदलाव करना पड़ता है एवं नई–नई गतिविधियों को काम में लेना पड़ता है। अधिकतर ऐसा देखा गया है कि शिक्षण पद्धति में थोड़े बदलाव के साथ कक्षा के सारे बच्चों तक पहुँचा जा सकता है और 'सभी का सीखना' सुनिश्चित किया जा सकता है।

आकलन के सिद्धांत पर हमने चर्चा कर ली है। आइए, अब यह समझने का प्रयास करते हैं कि शैक्षिक सत्र 2020–2021 में, हमारी कक्षाओं में किस तरह के आकलन होने चाहिए, इन्हें कैसे एवं कब किया जाना चाहिए।

बच्चों द्वारा अर्जित दक्षताओं के आकलन की रूपरेखा

नियमित आकलन

- **पाठ्यपुस्तक पर आधारित आकलन:** पाठ्यपुस्तक में आकलन के लिए 'कितना सीखा?' पाठ दिया हुआ है। इसके लिए द्वितीय कालांश में दी गई रणनीति को ग़ौर से पढ़ें।
- **सहज–3:** प्रत्येक पाठ के अंतिम दिन बच्चों के पठन स्तर का आकलन किया जाना है। इस आकलन के आधार पर शिक्षक बच्चों की मदद कर पाएँगे। इसके लिए सहज–3 के लिए दिए गए दिशा–निर्देश को ग़ौर से पढ़ें।

सावधिक आकलनः इस अकादमिक सत्र में कक्षा स्तर पर 2 बार सावधिक आकलन किया जाएगा। पहला, सप्ताह 11 में और दूसरा, सप्ताह 16 में। इसे एक आंतरिक आकलन के रूप में देखा जाना चाहिए। इसका उद्देश्य शिक्षकों द्वारा आकलन किया जाना एवं उसके आधार पर बच्चों को कक्षा के स्तर पर एवं पीछे छूटे हुए बच्चों को मदद देना है।

भाषा शिक्षण के घटक	आकलन–1 (सप्ताह–11)	आकलन–2 (सप्ताह–16)
मौखिक भाषा का विकास	• सुनी हुई कहानी से संबंधित 5 प्रश्नों (3 तथ्यात्मक और 2 खुले छोर) का मौखिक रूप से 1–2 वाक्य में जवाब दे पाना। • चित्र पर चर्चा के दौरान अपनी बात 1–2 वाक्यों में रख पाना।	• सुनी हुई कहानी से संबंधित 5 प्रश्नों (2 तथ्यात्मक और 3 खुले छोर) के उत्तर 1–2 वाक्यों में दे पाना। • चित्र पर चर्चा के दौरान अपनी बात 2–3 वाक्यों में रख पाना।
प्रवाहपूर्ण पठन	• कक्षा–3 के स्तर के पाठ्यांश (50–70 शब्द) को बेहतर प्रवाह व शुद्धता के साथ पढ़ सकता/सकती है।	• कक्षा–3 के स्तर के पाठ्यांश (70–100 शब्द) को बेहतर प्रवाह व शुद्धता के साथ पढ़ सकता/सकती है।
पढ़कर समझना	• पाठ को पढ़कर प्रश्नों (5) के जवाब दे पाना।	• पाठ को पढ़कर प्रश्नों (5) के जवाब दे पाना।
लेखन	• किसी चित्र, कहानी, कलरव और सहज के संबंधित पाठ से संबंधित वाक्य लिख पाना (1–2 वाक्य)।	• किसी चित्र, कहानी, कलरव और सहज के संबंधित पाठ से संबंधित वाक्य लिख पाना (2–3 वाक्य)।

इस आकलन के आधार पर आप आगे की कार्ययोजना के लिए प्राथमिकता तय कर सकते हैं। मगर उन बच्चों के लिए उपचारात्मक शिक्षण की योजना बनाने की ज़रूरत है, जो अभी भी शब्द–पठन नहीं कर पा रहे हैं।

13. भाषा शिक्षण से संबंधित कुछ प्रमुख बातें

टाइम–ऑन–टास्क: जितने समय बच्चे शैक्षणिक गतिविधि में व्यस्त रहते हैं, हम कहते हैं कि वे 'टाइम–ऑन–टास्क' लगा रहे हैं। अतः जो गतिविधि कक्षा में कराई जा रही हो, उसमें यदि बच्चे जुड़े हों या व्यस्त हों – वे काम कर रहे हों, चाहे वह कैसा भी काम हो (सामूहिक दोहरान, लेख को उतारना ही क्यों न हो), वह टाइम–ऑन–टास्क कहलाता है। यह सबसे प्रभावी तब होता है जब कक्षा में कराई जाने वाली सभी गतिविधियों से बच्चे सक्रिय रूप से जुड़े हों। टाइम–ऑन–टास्क बच्चों से ज़्यादा शिक्षण की गतिविधि और तरीके पर निर्भर करता है।

स्कैफ़ोल्डिंग (Scaffolding) : स्कैफ़ोल्डिंग उस प्रक्रिया को कहते हैं जिसमें किसी नई अवधारणा अथवा कौशल को सीखने में बच्चों को मदद दी जाती है। यह वह सहारा या मदद है जो शिक्षक द्वारा बच्चों को लगातार देनी होती है, जब वे कोई नया ज्ञान या कौशल सीख रहे हों। इसमें यह भी बहुत ज़रूरी है कि बच्चों का जो स्तर इस समय है, उससे कुछ ऊपर के स्तर की चुनौती बच्चों को दी जाए। यह मदद अध्यापक, किसी वयस्क अथवा अधिक सक्षम सहपाठी द्वारा बच्चों को उपलब्ध कराया जाने वाला एक अस्थायी मार्गदर्शन या सहयोग होता है। इस मार्गदर्शन अथवा सहयोग के बिना स्वतंत्र रूप से बच्चे उस काम को करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। यह मार्गदर्शन बच्चों की उन क्षमताओं को बढ़ाने के उद्देश्य से दिया जाता है, ताकि आगे जाकर बच्चा उस काम को स्वयं ही स्वतंत्र रूप से करने लगे।

सीखने की जिम्मेदारी क्रमशः सौंपना / जी.आर.आर. (Gradual Release of Responsibility): कक्षा में बच्चों को स्कैफ़ोल्डिंग देने का एक प्रभावी तरीका सीखने की ज़िम्मेदारी क्रमशः सौंपना अथवा जी.आर.आर. है। इसमें शिक्षक सीखने की ज़िम्मेदारी धीरे–धीरे बच्चों को सौंपता है। इस रणनीति के तहत चार मुख्य चरण होते हैं, जिसमें कक्षा में किए जाने वाले कामों को धीरे–धीरे तथा जान–बूझकर अध्यापक से हटाकर अध्यापक और बच्चों के बीच संयुक्त ज़िम्मेदारी की ओर फिर संयुक्त ज़िम्मेदारी से बच्चे द्वारा स्वतंत्र अभ्यास और उपयोग की ओर ले जाना होता है। ***यह रणनीति, इस अपेक्षा से कि "सारी ज़िम्मेदारी अध्यापक की है" से आगे बढ़कर "बच्चे सारी ज़िम्मेदारी ले रहे हैं" की स्थिति तक पहुँचती है।*** कक्षा में करवाई जाने वाली विभिन्न गतिविधियों में जिम्मेदारियों का हस्तांतरण क्रमशः किया जाना चाहिए जिसे नीचे दी गई आकृति से समझा जा सकता है:

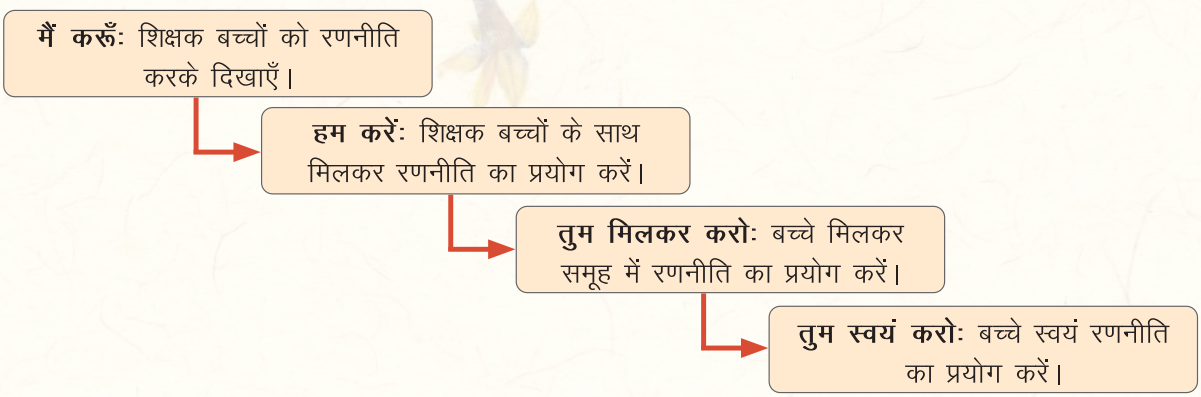

भाग 3

कक्षा–3 के शिक्षण कार्य से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण पहलू

14. कक्षा प्रबंधन

कक्षा प्रबंधन एक विशेष प्रकार की रणनीति एवं तकनीक है जो सभी बच्चों को सक्रिय रूप से कक्षा में हो रही गतिविधियों से जोड़े रखती है। जब कक्षा–प्रबंधन की रणनीतियों को प्रभावी ढंग से निष्पादित किया जाता है, तो शिक्षक उन व्यवहारों को कम करने में सक्षम हो जाते हैं जो सीखने या सीखने की प्रक्रिया को बाधित करते हैं। इसके साथ–साथ प्रभावी कक्षा–प्रबंधन की रणनीतियाँ बच्चों के ऐसे व्यवहारों को बढ़ा देते हैं जो सीखने में मदद करते हैं।

कक्षा प्रबंधन की एक सीमित या पारंपरिक परिभाषा "अनुपालन" की ओर इंगित करती है जैसे छात्र अपनी सीट पर बैठे हों, दिशा–निर्देश सुन रहे हों, आदि। परंतु प्रभावी कक्षा प्रबंधन की सीमा इससे कहीं ज़्यादा होती है। प्रभावी कक्षा प्रबंधन वह सभी चीज़ें है जो सीखने में मदद करें, जैसे, शिक्षक का व्यवहार (बच्चों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण और उनकी प्रतिक्रियाओं को कक्षा में स्थान देना), वास्तविक अपेक्षाएँ (बच्चों से अपेक्षित कार्य की जानकारी बच्चों के साथ साझा करना, आदर्श प्रस्तुतीकरण एवं मार्गदर्शन), शिक्षण सामग्री (सार्थक एवं विभिन्न शिक्षण सामग्री का उपयोग), गतिविधियाँ (सार्थक, विविध, स्तरानुसार, जोड़ों एवं समूह में कार्य) आदि।

प्रभावी कक्षा–कक्ष प्रबंधन से संबंधित कुछ सुझाव नीचे दिए गए हैं:

समय प्रबंधन

- बेहतर शिक्षण के लिए शिक्षक अलग–अलग शिक्षण विधि और गतिविधि काम में लेते हैं। गतिविधि में बच्चों के 'इन्तजार का समय' (wait time) व 'काम का समय' (time on task) कितना मिला है, यह एक महत्वपूर्ण मापदंड है, जिससे किसी भी गतिविधि की प्रारंभिक प्रभावकारिता का पता चलता है। 'इन्तजार का समय' (wait time) का अर्थ बच्चों को सोचने के लिए दिए जाने वाले समय से है। टाइम–ऑन–टास्क पर हमने पहले बात की है।
- बहुकक्षीय शिक्षण की स्थिति में समय का संतुलित उपयोग शिक्षक के लिए एक चुनौती है। शिक्षक को दूसरी कक्षा के लिए ऐसा कार्य देना चाहिए जिसे बच्चे स्वतंत्र रूप से या आपसी सहयोग से कर सकें। उन्हें शिक्षक के सहयोग की अधिक मदद की ज़रूरत नहीं पड़े।

बैठक व्यवस्था

- बैठक व्यवस्था कक्षा में हो रही गतिविधि के अनुरूप होनी चाहिए। सामूहिक कार्यों जैसे–कहानी सुनाने के समय बच्चे शिक्षक के नज़दीक गोल घेरे में या अर्द्ध वृत्ताकार रूप में बैठ सकते हैं। जबकि अन्य गतिविधियों के दौरान बच्चे कक्षा में फैलकर जोड़ों में, छोटे–छोटे समूहों में बैठ सकते हैं।
- बैठक व्यवस्था ऐसी हो जिसमें सामाजिक रूप से विविधिता वाले बच्चों को घुल–मिलकर बैठने के अवसर मिलें। लड़कियों को भी समान अवसर मिलें। जो बच्चे शर्मीले हैं या जो कक्षा में पीछे की तरफ बैठने की कोशिश करते हैं, शिक्षक उन्हें आगे बैठने के लिए प्रोत्साहित करें।
- हमारा प्रयास यह हो कि पहली कक्षा के बच्चे अलग ही बैठें ताकि शिक्षक अपनी भाषा शिक्षण–योजना को ठीक से लागू कर सकें। बहुकक्षीय शिक्षण की स्थिति में शिक्षक इस प्रकार से बैठक व्यवस्था करें कि दोनों कक्षाओं के बच्चे आराम से उचित दूरी बनाकर बैठ सकें। ऐसी बैठक व्यवस्था में शिक्षक को कक्षा–संचालन और समन्वयन में मदद मिलेगी।

भयमुक्त एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण

- भाषा के लिए नियुक्त और प्रशिक्षित शिक्षक ही भाषा का शिक्षण कार्य करें।
- यह आवश्यक है कि शिक्षक कक्षा में ऐसा भयमुक्त माहौल बनाएँ जहाँ बच्चे खुलकर सीखने की प्रक्रिया में शामिल हो सकें। बच्चे बिना झिझक और डर के शिक्षक से संवाद कर सकें। कक्षा व्यवस्था संबंधी नियमों को शिक्षक और बच्चे मिलकर तय करें।
- शिक्षण कार्य के दौरान शिक्षक को बच्चों के साथ बराबरी का व्यवहार करने की कोशिश करनी चाहिए। अगर बच्चे दरी पर बैठे हैं तो शिक्षक भी उनके साथ दरी पर ही बैठें। ऐसा होने पर बच्चों को भावनात्मक रूप से शिक्षक से जुड़ने को मौका मिलता है और यह उनके सीखने में बहुत सहयोग करता है। शिक्षक बच्चों की उपलब्धियों की प्रशंसा करें एवं उन्हें बेहतर करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- सभी बच्चों को शिक्षण कार्य के दौरान तय रणनीति के तौर पर जोड़ों में, समूहों में और व्यक्तिगत तौर पर काम करने के पर्याप्त मौके मिलने चाहिए।
- कक्षा–कक्ष लिखी और छपी हुई सामग्री से सुसज्जित होना चाहिए एवं इसको शिक्षण प्रक्रिया में उपयोग में लिया जाना चाहिए। सामग्री समय–समय पर बदलती रहनी चाहिए।
- बच्चों को अपनी घर की भाषा में संवाद के पर्याप्त मौके मिलने चाहिए।

सहयोगात्मक अधिगम (समूह कार्य)

- बच्चों को समूहों में बाँटने के दौरान इस बात का विशेष ख़याल रखना चाहिए की प्रत्येक समूह में विभिन्न अधिगम स्तर के बच्चे हों। ऐसा होने पर बच्चों को एक–दूसरे से सीखने में मदद मिलती है। इसके साथ–ही शिक्षक को भी कार्य संचालन में आसानी होती है।
- शिक्षक सभी तथाकथित 'कमजोर बच्चों' को एक समूह में रखकर एवं दूसरे समूह में 'तेज़ बच्चों' में बाँटकर कार्य कभी भी न सौंपे। ऐसा करने से अलग–अलग स्तरों के बच्चों के बीच में अलगाव की भावना उत्पन्न हो सकती है।
- कक्षा में इन समूहों की संख्या 5–6 तक की ही होनी चाहिए एवं हर समूह में 5–7 बच्चे हो सकते हैं। समूहों की संख्या ज़्यादा होने से शिक्षकों को बच्चों के कार्य का अवलोकन करने में और ज़रूरी मदद देने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता। इसके साथ ही सभी बच्चों को गतिविधि में समान रूप से योगदान देने के पर्याप्त मौके नहीं मिल पाते हैं।

15. कक्षा में प्रिंट रिच (प्रिंट समृद्ध) वातावरण

बच्चों के लिए कक्षा को प्रिंट रिच बनाना बहुत महत्वपूर्ण है। कई सामग्रियाँ प्रिंट रिच के लिए इस्तेमाल की जाती हैं: किताबें (बच्चों के स्तर की), पोस्टर, चार्ट्स, शिक्षक के द्वारा तैयार सामग्री, बच्चों के द्वारा बने चित्र, लेखन के नमूने, इत्यादि। शिक्षकों को कक्षा को प्रिंट रिच बनाने के लिए निम्नलिखित घटकों का ध्यान रखना चाहिए:

प्रिंट समृद्ध वातावरण के मुख्य घटक

क्रम	प्रिंट रिच के घटक	प्रिंट रिच सामग्रियों का कक्षा में उपयोग	व्यवस्था और सामग्री
1	रीडिंग कॉर्नर		बच्चों के स्तर की किताबों को कक्षा के किसी कोने में सजाकर इस तरह रखें कि बच्चे उसे लेकर देख सकें। इसके लिए विद्यालय में उपलब्ध किताबों का उपयोग करें। दीवार में रस्सी टाँगकर भी कुछ किताबों को रखा जा सकता है।
2	चित्र चार्ट		इनको कक्षा में इस तरह दीवारों और खिड़कियों के सहारे रखें कि यह सबको दिख जाए। इन्हें दीवारों से न चिपकाएँ क्योंकि चित्र पर चर्चा के लिए इन्हें बच्चों के बीच में रखना पड़ता है।
3	कविता पोस्टर / कहानी पोस्टर		मिशन प्रेरणा कार्यक्रम के तहत आपके विद्यालय में कविता और कहानियों के पोस्टर दिए जा रहे हैं। इन्हें दीवारों पर लगाएँ। ज़मीन से इनकी ऊँचाई ऐसी हो कि बच्चे आराम से पोस्टर देख पाएँ।

4	शब्द दीवार		दीवारों पर कई तरह के शब्द चार्ट लगाए जा सकते हैं: • बच्चों के नाम और उनके पसंद की चीज़ें • बच्चों के जन्मदिन का चार्ट • पढ़ाई गई कहानियों के नाम • कहानी और कविता • स्थानीय कविता और कहानी • बोलचाल के स्थानीय शब्द • कहानी/बातचीत/साझा पठन में आए शब्द • कोई चित्र और उसका वर्णन ऐसे चार्ट (नए शब्द, कहानियाँ, कविताएँ और चित्र) एक निश्चित समयांतराल (15 दिन/महीने में एक बार) पर बदलने चाहिए।
5	लेबलिंग (वस्तुओं के नाम)		कक्षा में मौजूद वस्तुओं के नाम काग़ज पर लिखकर प्रत्येक वस्तु के पास चिपकाए जा सकते हैं। जैसे– दरवाज़ा, खिड़की, अलमारी, टेबल, इत्यादि
6	बच्चों के चित्र और अन्य कार्य		बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों को दीवार पर प्रदर्शित करने के लिए एक निश्चित जगह चुनें। उस पर उनके चित्रों को नाम सहित चिपकाएँ। आगे चलकर बच्चे कुछ शब्द लिखते हैं तो उन्हें भी चिपकाया जा सकता है। बच्चों के इन कार्यों को समय–समय पर बदलते रहें।